जिप्सी



रूस के अमर कवि अलेक्सान्दर सेर्गेविच पुश्किन

जिप्सी

मूल लेखक

अलेक्सान्दर सेर्गेविच पुश्किन



अनुवादक

वीर राजेन्द्र ऋषि

एम० ए०, प्रभाकर, रूसी भाषा और साहित्य में डिप्लोमा प्राप्त

प्रस्तावना-लेखक

प्रमथ नाथ बनर्जी

अध्यक्ष, विदेशी भाषा-विद्यालय, रक्षा-मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

१९५५

आत्माराम एण्ड संस

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली-६

प्रकाशक
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

मूल्य दो रुपये

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
क्वीन्स रोड, दिल्ली

प्रस्तावना

बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि श्री ऋषि ने रूस के अमर कवि पुश्किन के अनोखे काव्य 'त्सीगानी' अर्थात् जिप्सी का सरस अनुवाद राष्ट्रभाषा में किया है।

अनुवादक ने कई साल तक रूसी भाषा का अध्ययन और अनुशीलन हिन्दुस्तान और मास्को में किया है। आपकी निष्ठा तथा लगन सराहनीय हैं।

इटालियन भाषा में एक कहावत है—"त्रादुत्तोरे त्रादितोरे" अर्थात् अनुवादक विश्वासघातक होता है। इसका तात्पर्य यह है कि साधारणतया अनुवादक मूलतत्व को समझने में और उसे ठीक-ठीक व्यक्त करने में चूक जाता है जिसके फलस्वरूप अनर्थ की सृष्टि होती है। पर ऋषि जी का सुन्दर, सुललित तथा यथार्थ अनुवाद इस नियम का अपवाद-सा प्रतीत होता है।

मुझे आशा है—आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है—कि आगे चलकर ऋषि जी इसी प्रकार रूसी साहित्य के अनमोल रत्नों का द्वार हिन्दी भाषा-भाषियों के लाभार्थ उद्घाटन कर हमारे उन देशवासियों को, जिनको रूसी भाषा का ज्ञान प्राप्त नहीं है, रूसी साहित्य से परिचय कराने में सहायता पहुंचाते रहेंगे।

मुझे यह भी आशा है कि हमारे देश की नवयुवतियां तथा नवयुवक श्री ऋषि की एकनिष्ठ साधना तथा सेवा से प्रेरित होकर रूसी तथा अन्यान्य महत्त्वपूर्ण विदेशी भाषाओं का अध्ययन तथा अनुशीलन करके हिन्दी भाषा तथा साहित्य को और भी सम्पन्न बनाने की सफल चेष्टा करेंगे।

प्रमथ नाथ बनर्जी
अध्यक्ष
विदेशी भाषा विद्यालय, रक्षा मन्त्रालय
भारत सरकार

नई दिल्ली
११ मई, १९५५

दो शब्द

आज तक रूसी साहित्य से हिन्दी में जो अनुवाद हुए हैं वे सब सीधे रूसी भाषा से न होकर उनके अंग्रेजी भाषा के अनुवादों से हुए हैं। रूसी भाषा से अंग्रेजी भाषा और फिर अंग्रेजी भाषा से हिन्दी में अनुवाद करने से रूसी कृति की मौलिकता सर्वथा नष्ट हो जाती है। हिन्दी अनूदित साहित्य के इतिहास में यह प्रथम अवसर है कि एक रूसी कृति का सीधा रूसी भाषा से हिन्दी में अनुवाद करके उसकी मौलिकता को सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है। यह प्रयास कहाँ तक सफल रहा है, इसका निर्णय केवल पाठक ही कर सकते हैं।

रूसी मूलपाठ भी साथ-साथ हिन्दी लिपि में दे दिया गया है। इससे वे सज्जन जो रूसी भाषा का ज्ञान नहीं रखते मूल रूसी भाषा में इस कविता को पढ़कर आनन्द उठा सकते हैं।

मास्को में १९५० से १९५२ तक रहने के पश्चात् मेरे भारत लौटने पर रूसी भाषा की अमर कृतियों को हिन्दी में अनुवाद करके भारत की जनता के सम्मुख रखने के संकल्प में जो प्रेरणा मुझे श्री प्रभाकर माचवे से मिली है तथा हिन्दी अनुवाद में श्री राजेन्द्र द्विवेदी की जो सहायता प्राप्त हुई है उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

ई-६७, देवनगर
नई दिल्ली
१२ मई, १९५५

वीर राजेन्द्र ऋषि

रूसी भाषा के

अपने गुरु

व्लादीमीर अनातोलेविच शिबायेव

के

शुभ चरणो मे समर्पित

पुश्किन और उसके काव्य का संक्षिप्त परिचय

"पुश्किन नाम से ही मन में रूस के उस लब्धप्रतिष्ठ राष्ट्र-कवि का विचार हो आता है···। पुश्किन असाधारणता का प्रतीक है।··· वह आज से दो सौ वर्ष बाद का पूर्णतः समुन्नत रूसी व्यक्ति है। उसमें रूस की प्रकृति, रूस की आत्मा, रूस की भाषा और रूसी नैतिक स्तर उसी प्रकार स्वच्छ रूप से और विमल सुन्दरता से प्रतिबिम्बित है, जैसे शीशे की उन्नत सतह पर प्रकृति का एक अनुपम दृश्य।" पुश्किन के बारे में गोगोल ने ये शब्द कवि के जीवन-काल में ही कहे थे।

"पुश्किन प्रथम व्यक्ति था, जिसने राष्ट्र-निर्माण में साहित्य की महत्ता को समझा। उसने महसूस किया कि साहित्य-सेवा दफ्तर अथवा राज-दरबार में काम करने की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। वह साहित्य को उच्च शिखर पर पहुँचाने वाला सर्वप्रथम रूसी था। उसने जन-भावनाओं और विचारों को तथा जन-जीवन के विभिन्न रूपों को अपनी कविता द्वारा अभिव्यक्त किया।"—ये हैं पुश्किन के बारे में गोर्की के शब्द।

पुश्किन का बाल्य-काल

अलेक्सान्दर सेर्गेविच पुश्किन का जन्म एक जमींदार घराने में ६ जून, १७६६ ई० में मास्को में हुआ था। माता की ओर से वह एबेसीनिया-निवासी अब्राहम पेत्रोविच हानीबाल के वंशज थे जिसको आठ वर्ष की ही आयु में अफ्रीका-तट से उठाकर कुस्तुन्तुनिया लाया गया था और जो वहाँ से फिर पीतर प्रथम द्वारा रूस लाया गया था। इसी घटना को पुश्किन ने अपनी कथा 'आराप पेतरा वेलीकोवो' (पीतर महान् का हब्शी गुलाम) का रूप दिया है।

कवि का बचपन फ्रांसीसी अध्यापकों की देखभाल में गुज़रा, जिससे पुश्किन को फ्रांसीसी भाषा का बहुत अच्छा ज्ञान हो गया था। उनके पिता के पुस्तकालय में अठारहवीं शताब्दी के फ्रांस के लेखकों की पुस्तकों का अच्छा संग्रह था। पुश्किन ने चोरी-चोरी दिन-रात एक करके इन पुस्तकों को पढ़ डाला। पुश्किन की धाय आरीना रोदियोनोवना उनको कथाएँ सुनाया करती थी, जिनसे कवि का लोक-साहित्य की ओर बहुत रुझान हो गया। धाय द्वारा बचपन में सुनी हुई बहुत-सी कथाओं को कवि ने अपने काव्य का रूप दिया। लोक-साहित्य का वे इतना मूल्यांकन करते थे कि मिखाइलोवस्की में नज़रबन्दी के दौरान में उन्होंने अपने भाई को एक पत्र में बड़े भावुकता-पूर्ण शब्दों में लिखा था—"कहानियाँ सुनता हूँ और अपने पालन-पोषण में रह गई कमियों को पूरा करता हूँ। क्या ही आनन्द है इन कहानियों में! प्रत्येक कहानी जैसे कविता है!"

कविता लिखने का शौक पुश्किन को बचपन से ही था। एक बार पुश्किन ने स्कूल-परीक्षा में अपनी कविता कवि देरझाविन को पढ़कर सुनाई, जिसके बारे में वे स्वयं लिखते हैं—"देरझाविन पुलकित हो उठा। उसने मुझ से मिलना चाहा, मुझे आलिंगन करना चाहा। मुझे ढूंढ़ा गया, पर मैं हाथ न आया।" पुश्किन का काव्य रुसलान और ल्युदमीला पढ़ने के पश्चात् देरझाविन ने अपना फ़ोटो पुश्किन को इन शब्दों के साथ भेंट किया था—"हारे हुए गुरु की ओर से शिष्य को!"

त्सारस्कोय सेलो के कालेज में अध्ययन करने के पश्चात् पुश्किन विदेशी विभाग में नौकर हो गये। परन्तु उनका मन नौकरी में कम लगता था। पुश्किन की काव्य-कथा येवगेनी ओनेगिन में लिखा है कि "वह ऐश्वर्य के जीवन में पड़ गया। नए फ़ैशन के बाल कटवा लिये और लन्दन का बाँका जवान बन बैठा! वह माज़ूरका बड़ी नज़ाकत से नाचता और सबसे घुल-मिलकर रहता। समाज में वह सर्वप्रिय हो गया।"

अमर कृतियों की रचना

१८१८ में उन्होंने अपनी पहली काव्य-कथा 'रुसलान और ल्यूद-मीला' लिखी। यह काव्य लोक-साहित्य की सामग्री पर आधारित था। एक कविता लिखने के अपराध में उन्हें दक्षिणी रूस में निर्वासित कर दिया गया, जहाँ वे १८२०-२४ तक रहे। इस प्रवास के दौरान में पुश्किन ने स्वच्छन्दतावाद की अपनी अमर कृतियों—'काकेशिया का बन्दी', 'बाख्चीसराय का फव्वारा', 'डाकू भाई' और 'जिप्सी'—की रचना की। इन कविताओं में पुश्किन ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों पर क्षोभ प्रकट किया था। इन कविताओं में यथार्थता कूट-कूट कर भरी थी। 'काकेशिया का बन्दी' के विषय में रूस के प्रसिद्ध आलोचक बेलिन्स्की ने लिखा है—"युवकगण इससे बहुत आकर्षित और पुलकित थे। उसका कारण यह था कि इस कविता में उनका स्वयं अपना ही प्रतिबिम्ब मिलता था।"

निर्वासन और मृत्यु

१८२४ में पुश्किन को मिखाईलोवस्की में प्रवासित कर दिया गया। वहाँ वे दिसम्बर १८२५ तक रहे। पहले उन्हें घूमने-फिरने की जो थोड़ी-बहुत स्वतन्त्रता थी, वह भी वहाँ छीन ली गई। जब १८२५ में ज़ार निकोलाई प्रथम के विरुद्ध दिकाब्रिस्तों ने विद्रोह किया, तो पुश्किन मिखाइलोवस्की में ही थे। बहुत से विद्रोही पुश्किन के घनिष्ट मित्रों में से थे। पुलिस ने उनके मकान की भी तलाशी ली। पर पुश्किन को इस बात का पहले से ही पता लग चुका था, इसलिए पुलिस के आने से पहले ही उन्होंने सारे काग़ज़ जला दिये।

एक वर्ष पश्चात् उन्हें पीतरबुर्ग बुला लिया गया, जहाँ वे ज़ार से मिले। निकोलाई प्रथम ने उनको क़ाबू में रखने के उद्देश्य से एक अच्छी सी नौकरी दे दी। यहाँ के वातावरण से पुश्किन इतने दुःखी हुए कि वे अपनी बुद्धि ठिकाने रखने के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे।

१८३१ में पुश्किन ने एक युवती से विवाह कर लिया। वह बड़ी सुन्दरी थी, परन्तु साथ ही बहुत ही खर्चीली और आवारा भी थी। यह पुश्किन के लिए एक नई मुसीबत थी। विवाह के पश्चात् पुश्किन ने पीतरबुर्ग में फिर से विदेशी विभाग में नौकरी कर ली। अपने पारिवारिक जीवन के विषय में उन्होंने अपने एक मित्र को एक पत्र में लिखा था—"साहित्य-सेवा करने के लिए अब मुझे वह अविवाहित जीवन की-सी स्वतन्त्रता नहीं रही। समाज में चक्कर काटता हूँ। मेरी पत्नी बड़ी फ़ैशन-परस्त है। इस सब के लिए पैसा चाहिए। पैसे के लिए मुझे श्रम करना पड़ता है और श्रम के लिए एकान्त आवश्यक है।" नौकरी से खर्च चलाना कठिन हो गया, जिसके फलस्वरूप पुश्किन को कर्ज़ लेना पड़ा। अपनी पत्नी की मान-रक्षा के लिए २७ जनवरी, १८३७, को उसे एक सैनिक अफसर दांतेस से द्वन्द्व युद्ध भी करना पड़ा था। इस द्वन्द्व युद्ध में वे इतने घायल हुए कि २९ जनवरी, १८३७, को इस संसार से चल बसे।

पुश्किन की रचनाएँ

गीति-काव्य के अतिरिक्त पुश्किन की निम्नलिखित कुछ अमर कृतियां हैं :

काव्य-कथाएं—'येवगेनी ओनेगिन', 'रुसलान ल्यूदमीला', 'काकेशिया का बन्दी', 'बाख्चीसराय का फव्वारा', 'पोलतावा', 'ताम्बे का घुड़सवार' और 'जिप्सी'।

काव्य-नाटक—'बोरीस गोदूनोव' और 'रुसालका'।

गद्य-कथाएं—'दूब्रोवस्की', 'कप्तान की बेटी', 'स्टेशन मास्टर', 'बर्फ़ का तूफ़ान' आदि।

स्थानाभाव के कारण यहां उनकी सारी रचनाओं पर प्रकाश डालना असम्भव है। फिर भी उनकी प्रमुख रचनाओं का थोड़ा-सा परिचय देना आवश्यक है।

जिप्सी

पुश्किन की कविताओं में 'जिप्सी' सर्वाधिक मार्मिक, करुण और यथार्थवादी रचना है। अपने दक्षिण के प्रवासकाल (१८२०-२४) में उन्हें दो बार बेसारबिया जाना पड़ा था, जहाँ अनेक बार उन्हें जिप्सियों के संसर्ग में आने, काफ़ी समय बिताने, उनके जीवन और स्वभाव का अनुभव करने और उनके दुख-सुख तथा प्रेम-प्रतिद्वन्द्विता की बातें जानने का अवसर मिला था। इसे उन्होंने मिखाइलोव में १८२३ में शुरू किया और १८२४ में समाप्त किया। इस रचना में जितना ज्वलंत आभास उनकी प्रखर प्रतिभा का मिलता है, उतना ही गहरा जिप्सियों की करुण जीवन-कथा का चित्र भी आँखों के सामने उपस्थित हो जाता है।

इस कविता में पुश्किन ने प्रकृति से विच्छिन्न शहरी सभ्यता तथा प्रकृति से सन्निकट आदिम जीवन का बड़ी सुन्दरता से अन्तर दिखाया है। इसका कथासार इस प्रकार है—नगर-निवासी आलेको शहरी जीवन से ऊबकर जिप्सियों की एक टोली से जा मिलता है। जिप्सी युवती ज़ेम्फीरा से उसका प्रेम हो जाता है। जिप्सियों के स्वभाव के अनुकूल ज़ेम्फीरा आलेको के प्रेम से ऊब जाती है और किसी अन्य को अपना लेती है। शहरी सभ्यता में पला आलेको इसको सहन नहीं कर सकता। वह ज़ेम्फीरा और उसके नए प्रेमी का वध कर देता है। इस कथा को पुश्किन ने एक उत्कृष्ट कविता का रूप दिया है। शहरी जीवन का वर्णन करते हुए कवि आलेको के मुख से कहलवाता है—"वहाँ लोग भिच-भिचकर सीमा में रहते हैं। प्रातः पवन का अथवा मधुऋतु में चरागाहों की सुगन्धि का उपभोग भी नहीं कर सकते। प्रेम में लजाते, उमंगों को उभरने भी नहीं देते और अपनी स्वच्छन्दता का सौदा करते हैं। मूर्तियों के सामने निज मस्तक झुकाते हैं और धन, शृंखलाएँ वरदान में चाहते हैं। (शहर) छोड़कर क्या छोड़ा है मैंने? कपटपूर्ण संसार, पक्षपात-भावना से भरा हुआ निर्णय और जन-समूह का अकारण दमन, अत्याचार, लांछन-प्रताड़ना का अतिशय दीप्त विस्तार।"

आलेको अब जिप्सियों के साथ रहने लगा है। अब वह उन्मुक्त और स्वच्छन्द है। उसकी प्रियतमा ज़ेम्फीरा उसके साथ है।

वह है अब निवासी स्वच्छन्द संसार का।
उस पर अब दिनकर की रश्मि उल्लासपूर्ण
मुस्करा रही है दिव्य दीप्ति यौवन की लिये।

× × ×

वह भी निश्चिन्त पक्षी के तुल्य—
देश-बहिष्कृत उड्डयनशील पक्षी-सा,
सुखमय सुरक्षित नीड़ आदि का न अभ्यस्त बना।
चारों दिशाएँ उसके हेतु थीं खुली हुई
रात काटने के लिए छत थी आकाश की
उठकर प्रभात में दिन की वह चिन्ता सब,
बस दैवेच्छा पर छोड़ देता था।

ज़ेम्फीरा किसी और से प्रेम करने लगती है। आलेको दुखी होकर उसके बूढ़े पिता से शिकायत करता है। बूढ़ा उसको समझाता है :

शान्त हो जा मित्र, अभी वह निरी बच्ची है,
बिल्कुल व्यर्थ है यह तेरी उदासी आज।
तेरे प्रेम में है व्यथा और अथक लगन है,
और स्त्री-हृदय सहज होता है विनोदी चपल।
देख वहाँ नीचे पूर्ववर्त्ती महराब के,
वह स्वच्छन्द चन्द्र चन्द्रिका बिखेर रहा,
और वह विचरता हुआ नीले नभस्थल पर,
फेंकता समस्त प्रकृति पर निज प्रभा एक रूप।
झाँकता है जब कभी वह किसी एक बादल में
उसको क्षण-भर हित कितना उज्ज्वल कर देता है।
लो, अब वह दूसरे बादल में चला गया
और वहाँ पर भी बस एक क्षण-भर के हेतु।

कौन उसे नभ में स्थिर स्थान बता सकता है,
और कह सकता है उससे—बस यहीं ठहर।
कौन कह सकता है युवती के हृदय से
एक ही से प्रेम कर तू, बेवफाई मत कर;
अतः तू शान्त हो जा।

नगर-निवासी आलेको की समझ में भला यह बात कैसे आए ? वह उत्तर देता है :

नहीं, मैं तो ऐसा नहीं हूँ।
मैं तो अधिकार अपना
बिना संघर्ष के छोड़ नहीं सकता हूँ।
अथवा मैं कम-से-कम बदला लेने का
आनन्द तो उठा लूँगा।

वह जेम्फीरा और उसके प्रेमी का बध कर देता है। बूढ़ा जिप्सी अब जान गया है कि शहर-निवासी इस स्वच्छन्द वातावरण का अभ्यस्त नहीं हो सकता। वह विवश होकर कहता है :

छोड़ दे हमारा साथ, अरे अभिमानी पुरुष !
जाहिल हैं हम, और कोई क़ानून नहीं कुछ भी है हमारे यहाँ।
देते नहीं दुःख हम किसी को, दण्ड नहीं देते;
हमें नहीं चाहिएँ खून और ठण्डी आहें,
किन्तु नहीं चाहते हम साथ रहना खूनियों के
पैदा नहीं तू हुआ है वन्य-जीवन हित;
लगेंगे भयंकर हमें तेरे बोल—
हैं हम डरपोक, पर सीधे स्वभाव के,
किन्तु तू पापी है और बड़ा साहसी है,
छोड़ दे हमारा साथ।

येवगेनी ओनेगिन

जिप्सियों के समाज से शहर-निवासी आलेको निकाला गया। परन्तु

सभ्य शहरी जीवन की रंग-रेलियां जो रंग लाती है, उन्हें पुश्किन ने अपने काव्य-उपन्यास 'येवगेनी प्रोनेगिन' में चित्रित किया है। यह पुश्किन की सबसे उत्कृष्ट रचना है और उसकी कल्पना का अनुपम नमूना है। यह कवि के सम्पूर्ण जीवन, आत्मा और प्रेम से ओत-प्रोत है। इसमें उसकी भावना, सूझ और कल्पना अपने उच्चतम शिखर पर पहुँच गई है। कथा का नायक येवगेनी प्रोनेगिन पीतरबुर्ग में पैदा हुआ। उसका पिता उच्च पद पर नौकर था और वह खासी सम्पत्ति का स्वामी था। अपव्ययी होने और सदा दावतें देने के कारण उसका दीवाला पिट गया। परन्तु स्वयं प्रोनेगिन भाग्यशाली था। इसके लिए एक फ्रांसीसी धाय और फिर एक फ्रांसीसी अध्यापक नौकर रखा गया, जो—

इस विचार से कि बच्चा ऊब न जाए
उसे खेल-खेल में पढ़ाता,
कड़ी नैतिक शिक्षा देकर उसको तंग न करता,
और शरारत के लिए मामूली-सी सज़ा देता,
और बगीचे में टहलाने ले जाता।

प्रोनेगिन सत्रह वर्ष का हो गया, तो फ्रांसीसी अध्यापक निकाल दिया गया और—

लीजिए मेरा प्रोनेगिन अब स्वतन्त्र है,
नवीनतम फ़ैशन के बाल कटवा लिये हैं :
लंदन का बाँका बन बैठा है,
और वह समाज का संसार देखने निकला !

× × ×

माज़ूरका नज़ाकत से नाचता,
बड़ा मिलनसार था ;
इससे अधिक चाहिए क्या ?
समाज ने निर्णय किया कि वह योग्य और बहुत प्रिय है !

येवगेनी छल-कपट, रूठने-बिगड़ने और बीमार पड़ने का बहाना

करने में बड़ा प्रवीण हो गया। वह लड़कियों को अपने प्रेमपाश में बाँधने में भी अति चतुर हो गया। उसको निमंत्रण-पर-निमंत्रण आते। सारा समय उसका कपड़े बदलने, नाचने और रंगरेलियाँ मनाने में ही बीतता। ओनेगिन रंगरेलियों के जीवन से शीघ्र ही ऊब गया। अब उसने बाहर आना-जाना छोड़ दिया। पिता की मृत्यु के पश्चात् वह अपने बीमार चाचा के पास गाँव में चला गया। चाचा की मृत्यु पर उसे उसकी सारी सम्पत्ति संभाल दी गई। परन्तु शीघ्र ही उस पर स्पष्ट हो गया—

एक शहर की भाँति गाँव में भी जी घबराता है;
यद्यपि वहाँ न सड़कें हैं, न भव्यशाली भवन,
न नृत्य, न ताश, न कवि-गोष्ठियाँ।
उसको उदासी ने आ घेरा और
सर्वत्र उसके पीछे-पीछे फिरने लगी
जैसे परछाईं या वफ़ादार पत्नी।

उसका एक घनिष्ट मित्र कवि लेंस्की था। उन दोनों के स्वभाव में आग-पानी का अन्तर था। लेंस्की ने ओनेगिन का लारेन नामी एक परिवार से परिचय कराया। उस परिवार में माँ और उसकी दो लड़कियाँ थीं। बड़ी का नाम था तात्याना और छोटी का नाम था ओल्गा। छोटी की मँगनी लेंस्की से हो चुकी थी और तात्याना ओनेगिन के प्रेम-पाश में फँस गई। वह ओनेगिन के प्रेम में बेचैन रहती। दो-चार दिनों में ही उसका रंग पीला पड़ गया। आख़िरकार तात्याना ने ओनेगिन को एक प्रेम-भरा पत्र लिखा, जिसका ओनेगिन ने कोई उत्तर नहीं दिया। तात्याना से एक भेंट पर ओनेगिन ने अपनी मजबूरी दिखाई और कहा:

परन्तु मैं स्वर्ग के लिए पैदा नहीं हुआ;
मेरी आत्मा इससे दूर है।
व्यर्थ होगी तुम्हारी सुन्दरता;
मैं इसके सर्वथा अयोग्य हूँ।
विश्वास कीजिए सशपथ कहता हूँ,

हमारा पारिवारिक जीवन दूभर रहेगा।
चाहे मैं तुमसे कितना ही सच्चा प्रेम करूँ,
अभ्यस्त होकर तुरन्त प्रेम जाता रहेगा।
यदि आँसू बहाओगी, तुम्हारे आँसू
मेरे हृदय को छू तक न सकेंगे,
उलटा उसमें क्रोधाग्नि बढ़ा देंगे।
स्वयं निर्णय कीजिए,
विवाह से मुसीबतों का आरम्भ हो जायगा,
और सम्भवतः उनसे वर्षों पीछा न छूटेगा।

इस भेंट के पश्चात् दोनों में मिलना-जुलना बन्द हो गया। दुर्भाग्य से तात्याना की वर्षगांठ पर वह लेंस्की के साथ एक बार फिर उस परिवार में गया। वहाँ अपने स्वभाव के अनुकूल उसने लेंस्की की मंगेतर ओल्गा पर प्रेमपाश फेंका और उसी के साथ नाचता रहा। लेंस्की इसको सहन न कर सका। दोनों में द्वन्द्व युद्ध हुआ, जिसमें लेंस्की मारा गया।

उधर तात्याना ने एक अमीर जर्नेल से विवाह कर लिया। दो वर्ष पश्चात् ओनेगिन यूरोप की यात्रा से लौटा। पीतरबुर्ग में एक नाच में उसकी तात्याना से भेंट हुई। उसने तात्याना से फिर से प्रेम जताना आरम्भ किया। परन्तु अब तात्याना की बारी थी। उसने ओनेगिन को एक पत्र लिखकर साफ़-साफ़ बता दिया कि अब वह उसकी नहीं हो सकती। उसने लिखा—

तब क्या यह झूठ है? बीहड़-मैदान में,
समाज की अफ़वाहों से दूर,
मैं तुम्हें पसन्द नहीं आई···अब क्या है,
जो तुम मेरे पीछे पड़े हो?
क्या इसलिए कि मैं अब
उच्च समाज की एक सदस्या हूँ,
कि मैं अमीर और ख्यात हूँ?

परन्तु अब मेरे भाग्य का निर्णय हो चुका है,
मैंने विवाह कर लिया है,
कृपा करके मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो,
मैं बातें नहीं बनाती, मुझे तुमसे अब भी प्रेम है,
परन्तु अब मैं दूसरे की पत्नी हूँ
और सदा वफ़ादार रहूँगी।

तात्याना यह कहकर चली गई। पुश्किन इस कथा का बस इसी समय निम्न शब्दों से अन्त कर देते हैं :

भाग्यशाली है वह,
जिसने रंगरेलियों के जीवन को शीघ्र ही छोड़ दिया,
जिसने जीवन-रूपी मदिरा के प्यालों को
बिलकुल खाली नहीं कर दिया,
जिसने उसकी कथा को पूरा नहीं पढ़ा,
परन्तु सहसा उसको छोड़ दिया,
जैसे मैंने अपने ओनेगिन को।

बाख्ची सराय का फव्वारा

इस कविता में एक तातारी सरदार गिरेई की कथा है। सरदार वारसा पर आक्रमण करके वहाँ के कन्याज़ (राजा) आदम की लड़की मारिया को उठा लाता है और उससे प्रेम करने लगता है, और अपनी पहली पत्नी ज़ारेमा की उपेक्षा करता है। ज़ारेमा ईर्ष्या की अग्नि में जलती है। वह मारिया के पास जाती है और कहती है—"मैं तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ, तुमसे प्रार्थना करती हूँ, तुम्हें अपराधी ठहराने का मुझ में साहस नहीं। मुझ पर तरस खाओ और मेरी प्रसन्नता और शान्ति लौटा दो। मेरा गिरेई मुझे वापस दे दो। मेरी प्रार्थना स्वीकार करो, वह मेरा है। परन्तु वह तुम्हारे प्रेम में अंधा हो चुका है। उसको मुझे लौटा दो। घृणा करके, बुरा-भला कहकर अथवा प्रेम से, जिस प्रकार भी हो, उसे

मुझे लौटा दो। वचन दो। परन्तु यदि आवश्यकता पड़ी तो मैं तुम्हें…। देखो, मेरे पास यह खंजर है और मैं काकेशिया की रहने वाली हूँ।"

उसकी प्रार्थना व्यर्थ जाती है। आखिरकार ईर्ष्या से अंधी होकर उसने एक रात मारिया को खंजर घोंपकर कत्ल कर दिया।

ताँबे का घुड़सवार

यह एक प्रेमी की कथा है, जिसकी प्रेमिका पीतरबुर्ग के १८३४ के तूफ़ान में बह जाती है। वह इसी दुःख से पागल हो जाता है और उसको ऐसा लगता है कि पीतर महान् की लेनिनग्राद में बनी मूर्त्ति उसका पीछा कर रही है। इस कविता में पीतरबुर्ग का बड़ा सुन्दर वर्णन है।

त्सीगानी

जिप्सी

त्सीगानी

(अलेक्सान्दर सेर्गेविच पुश्किन)



त्सीगानी शूमनोय् तोल्पोय
पो बेसारबीई कोचूयूत ।
ओनी सेवोद्न्या नाद रेकोय
व शात्राख इज़ोद्रान्नीख नोचूयूत ।
काक वोल्नोस्त्य्, वेसेल इख नोचलेग
ई मीरनी सोन पोद नेबेसामी ।
मेझ्दू कोलेसामी तेलेग,
पोलूज़ावेशेन्नीख कोव्रामी,
गोरीत ओगोन्; सेम्या क्रुगोम्

जिप्सी

(अलेक्सान्दर सेर्गेविच पुश्किन)



जिप्सीगण झुण्ड-झुण्ड,
विपुल कोलाहल कर विचरते हैं
बेसारबिया के पावन प्रदेश में ।
आज वे तटिनी के तट पर ही
जीर्ण-शीर्ण तम्बुओं में अपनी रात काटेंगे ।
कितना उन्मुक्त उल्लासमय यह निशा-विताम
और कितनी शान्तिपूर्ण निद्रा है व्योम की छाया में !
गाड़ियों के पहियों के
(जिनके अधबीच तक लटकती हैं अधफटी दरियाँ)
बीच के प्रदेश में जल रहा है चूल्हा,

गोतोबीत ऊर्म्फीम; व चिस्तोम पोल्ये
पासूत्सा कोनी; आ शात्रोम
वचनोय मेदवेद् लेभ्फ़ोत ना वोल्ये ।
फ़्स्यो भ्फ़ीबो पोलेवी स्तेप्येय :
काबोती मीरनीये सेम्येय,
गोतोवीख स उत्रोम व पुस्त् नेदाल्नी,
ई पेस्नी भ्फ़्पौन्, ई भिक वेत्येय,
इ स्वोन पोखोदनोय नाकोवाल्नी,

मो बौत ना तावोर कोचेवोय
इस्कोबीत सोन्नोये मोल्चान्ये,
ई दलीशनो व तीशीन्ये स्तेपनोय
लीश् लाई सोबाक दा कोनयेय रभ्फ़ान्ये ।
थोग्नी वेजचे पोगाशेन्नी,
स्पोकोयनो फस्यो, लूना सीयायेत
थोवना स नेबेस्नोय वीशीनी
ई तीखी तावोर ओजारयायेत ।
व शाभ्ये थोवनोम् स्तारीक ने स्पोत;
थोन पेरेद उगल्यामी सीवीत,
सोग्रेती डूख पोस्लेदनोम् भ्फ़ारोम,
ई व पोल्ये दाल्नोये ग्ल्यादीत,
मोचनीम् पोवेरनुस्तोय पारोम ।
येबो मोलोदेन्काया दोच्
पोशाला गुल्यात्य् व पुस्तीन्नोम् पोल्ये ।
थोना प्रीवीकला क रेजवोय वोल्ये,
थोना प्रीखौत; नो बौत उभ्फ़ नोच,
ई स्कोरो मेस्यात्स उभ्फ़ पोकीन्येत

परिवार सब चारों ओर बैठा खाना पका रहा है ।
खुले मैदान में चर रहे हैं घोड़े,
खेमों के पीछे पालतू रीछ स्वच्छन्द लेटा हुआ है,
कण-कण सजीव हो उठा है मैदान का।
और वे सांसारिक चिन्ताएँ कुटुम्ब की,
जो प्रातः ही तैयार होगा अग्रिम लघुयात्रा हित,
और गीत स्त्रियों के, और चोल बच्चों की,
और शब्द सफ़री निहाई का !

लो खानाबदोशियों के खेमों में छा गई है निद्रा की नीरवता।
और सुन पड़ता है मौन मैदान में
एकमात्र कुत्तों का भूंकना और घोड़ों की हिनहिनाहट ।
दिये बुझ चुके हैं सब, स्तब्ध निःशब्द दिशा,
टिमटिमा रहा है चांद एकाकी ऊंचे आकाश में,
और मूक खेमों पर बिखेर रहा है अपनी छटा !
जग रहा है बूढ़ा एक,
बैठा एक खेमे में है वह कोयलों के सामने,
तापकर उनकी अन्तिम आग,
और उस विस्तृत मैदान की ओर देख रहा है
लिपटा हुआ है जो निशा की तमिस्रा में ।
उसकी अवाम लड़की घूमने गई है दूर बीहड़ मैदान में ।
वह अभ्यस्त है अबाध स्वच्छन्दता की,
वह आएगी, पर रात आ चुकी है काफ़ी,
और शीघ्र चांद चला जायगा छोड़कर

मेबेस वाल्पौकीख प्रोक्लाका;
बोन्फीरी न्येत् काक न्येत्; ई स्तीन्येल
उबोगी उभ्रीन स्तारीका ।
  नो बोत प्रोना; जा नेयू स्लेदोम्
पो स्तेपी यूनोशा स्पेशीत;
रसीगानू वोफस्ये प्रोन नेवेबोम् ।
"ओरयेत्स मोय",—देवा गोवोरीत,
"वेडू या गोस्त्या, जा कुरगानोम्
येवो व पुस्तीन्ये या नाशला
ई व लाबोर ना नोच् जाज्वाला ।
प्रोन ओष्येत बोत्य्, काक मी, रसीगानं।·
येवो प्रेस्लेदूयेत जाकोन,
नो या येमू-पोडूगोय बूडू ।
येवो जोवूत प्रालेको; प्रोन
गोतोव इत्ती जा मनोयू पस्पूडू ।"
स्तारीक
  या राव । प्रोस्ताम्स्या वो उत्रा
पोव सेन्यू नाशेवो शात्रा
इस्ती प्रोबुड् उ मास ई वोल्ये,
काक ती आलोच्येश् । या गोतोव
स तोबोय देलीत्य् ई ख्लेब ई करोव ।
बुड् नाश, प्रीवोक्नी क नाश्येय वोल्ये,
बौबाडचेय बेवनोस्ती ई बोल्ये,
आ जावत्रा स उभ्रेन्नयेय जारयेय
व ओवमोय तेलेग्ये मी पोयेडेम्;
प्रीमीस् आ प्रोमीसेल ल्यूबोय :
ख्रेलेजो कूई इल् पेस्नी पोय

दूर आकाश के क्षितिज के बादलों को।
अब तक जेम्फीरा का कोई पता नहीं,
और ठण्डी हो रही है सूखी रोटी बूढ़े की।

एक किलक! यह लो वह आ गई,
और उसके पीछे मैदान में एक नवयुवक आ रहा है दौड़ा हुआ,
जिप्सी के लिए वह सर्वथा अपरिचित है।
"पिताजी!" गूंज उठा स्वर उस युवती का—
"लाई हूँ एक अतिथि, पीछे उपत्यका के
बीहड़ मैदान में मुझको मिला था वह;
और यहाँ बुला लाई हूँ रात-भर के लिए।
चाहता है बनना वह हम-जैसा जिप्सी,
कर रहा है कुटिल क़ानून उसका पीछा;
मित्र मैं उसकी बनूंगी पर।
उसका नाम है आलेको; है वह
तैयार सर्वत्र मेरे साथ जाने को।"

बूढ़ा

मुझे प्रसन्नता है ठहर तू प्रातः तक खेमे में हमारे,
अथवा रह सकता है हमारे पास उसके पश्चात् भी।
जैसी हो इच्छा तेरी; मैं तैयार हूँ
बाँटने को तेरे साथ रोटी और वासस्थान।
बन जा हमारा और अभ्यस्त हो जा इस जीवन से,
भ्रमणशील निर्धनता और स्वच्छन्दता से,
और कल पौ फटते ही एक गाड़ी में बैठकर चलेंगे हम;
तू भी कोई धन्धा संभाल ले:
लोहा कूट अथवा फिर गा कुछ स्वच्छन्द गीत,

ई सेला ओबओदी स मेदवेदेम् ।

आलेको

या ओस्तायूस् ।

ज़ेम्फीरा

ओन बूदेत मोय—

क्तो-भ् ओत् मीन्या येवो ओतगोनीत ?

नो पोज़्दनो···मेस्यात्स् मोलोदोय

ज़ाइयोल; पोल्या पोक्रीती म्गलोय,

ई सोन मीन्या नेवोल्नो क्लोनीत···

स्वेतलो । स्तारीक तिख़ोन्को ब्रोदीत

वोक्रुग ब्येज़्मोल्वनोवो शात्रा ।

"वस्ताबाय, ज़ेम्फीरा : सौलन्त्स्ये वस्खो द

प्रोस्नीस्, मोय गोसत्य् ! पोरा, पोरा !

ओस्ताव्स्ये, देती, लोभ्ये नेगी ।···"

—

ई स शूमोम् वीसीपाल नारोद;

शात्री राज़्ओब्रानी; तेलेगी

गोतोवी द्रोनूत्सा व पोख़ोद ।

फस्ये व्मेस्त्ये ओनूलोस्···ई वोत

तोल्पा वालीत व पुस्तीख़ रावनीनाख़ ।

ओस्ली व पैरेकीदनीख़ कोरज़ीनाख़,

देत्येय इग्रायूश्चीख़ नेसूत;

मुभ्या ई ब्रात्या, भ्योनी, देवी,

ई स्तार ई म्लाद वोस्लेद इदूत;

क्रिक, शुम, त्सीगान्स्कीये प्रीपेवी,

मेदवेद्या रेव, येवो त्सेप्येय

नेतेरपेलीवोये ब्र्यात्साञ्ये,

और गाँव-गाँव घूम साथ ले के रीछ को!

आलेको

मैं ठहरूँगा यहीं।

ज़ेम्फीरा

वह होगा जो मेरा—
कौन उसको मुझसे छीन ले जा सकता है ?
किन्तु हो गई देर……छिप गया है तरुण चाँद,
और धुंध छा गई है भूतल पर
और निद्रा कर रही है विवश मुझे।

हो गया उजाला। बूढ़ा चुपचाप घूम रहा
चारों ओर मूक स्तब्ध खेमे के।
"उठ ज़ेम्फीरा, अब सूर्योदय हो रहा है,
उठ ओ! प्रिय अतिथि मेरे,
समय हो गया है अब, समय हो गया है अब!
छोड़ दो बच्चो, इस सुखद शय्या को अब…।"

कोलाहल करते हुए जग गए जिप्सीगण;
खेमे उखाड़ दिए गए और गाड़ियाँ
झट तैयार हुईं कूच करने के लिए।
चल दिए मिलकर सब और लो
जिप्सियों के झुण्ड ने प्रवेश किया निर्जन-सी घाटी में।
गदहों पर खुर्जों में लटक रहीं टोकरियाँ,
जिनमें हैं छोटे-छोटे बच्चे खेल-कूद रहे।
पति और भाई, पत्नियाँ और कुमारियाँ,
बूढ़े औ' जवान पीछे-पीछे चल रहे हैं सब।
चीख, शोर, जिप्सी-गीतों की तानें और रीछ की गुर्राहट,
उसकी जंजीर की लगातार झनझनाहट,



भुण्ड बाँधकर जाते हुए जिप्सियों का एक काफ़िला.

मूल

लोखमोत्येव यारकीख पेस्त्रोता,
देत्येय ई स्तारत्स्येव नागोता,
सोबाक ई लाई ई ज़ावीवान्ये,
वोलीन्की गोवोर, स्क्रीप तेलेग,
फस्यो स्कूदनो, दीको, फस्यो नेस्त्रोयनो,
नो फस्यो ताक झीवो-नेस्पोकोयनो,
ताक चूझदो म्यौर्तवीख नाशीख नेग,
ताक चूझदो एतोय झीज़्नी प्राज़्दनोय,
काक पेस्येन् राबोव ओदनो ओब्राजनोय !

उनीलो यूनोशा ग्ल्यादेल
ना ओपूस्तेल्यू रावनीनू

अनुवाद

रंग-बिरंगे फटे कपड़ों का इन्द्रधनुषी जोड़-तोड़,
बच्चे और बूढ़ों का अध-नंगापन ।
कुत्तों का भूँकना औ' चिल्ल-पौं, स्वर वोलीन्का (बंशी) का,
गाड़ियों के पहियों की चर्र-मर्र,
सबसे टपकती है निर्धनता औ' जंगलीपन बरसता है,
सब बेताल है, पर सबका सब कितना सजीव है !
कितना है अविश्रान्त, कितना है भिन्न इस मुर्दा ऐश्वर्य से,
कितना है भिन्न रंगरेलियों के जीवन से,
जो है निर्जीव ज्यों गुलाम के नीरस गीत !

ताक रहा था वह युवा हो समुद्विग्न
नर्जन घाटी की ओर,

ई प्रूस्ती तायनूयू प्रोचीनू
इस्तोल्कोवात्य् सेब्ये ने स्मेल ।
स नीम् क्योरनोय्रोकाया ज़ेम्फीरा,
तेर्पेर् ओन वोल्नी भ़ीतेल् मीरा,
ई सौलन्त्स्ये वेसेलो नाद नीम
पोलूदेन्नोय क्रासोयू ब्लेश्चयेत;
च्तो ज़्ह सेरदत्स्ये यूनोशी त्रेपेश्च्येत ?
काकोय ज़ाबोतोय ओन तोमीम् ?

प्तीचका बोझ़िया ने ज़्नायेत
नी ज़ाबोती, नी त्रुदा;
ख़्लोपोतलीवो ने स्वीवायेत
दोल्गोवेचनोवो ग्नेज़्दा;
व दोल्गु नोच् ना वेत्क्ये द्रेमल्येत;
सौलन्त्स्ये क्रास्नोये वज़ोइद्योत ।
प्तीचका ग्लासू बोगा व्नेमल्येत,
वस्त्रेपेन्योत्सा ई पोयोत ।
ज़ा वेस्नोय क्रास्नोय प्रीरोदी,
लेतो ज़्नोयनोये प्रोइद्योत—
ई तूमान ई नेपोगोदी
ओस्येन् पोज़्दन्याया नेस्योत :
ल्यूद्याम् स्कूचनो, ल्यूद्याम् गोर्ये;
प्तीचका व दाल्नीये स्त्रानी,
व त्योपली क्राय, ज़ा सीन्ये मोर्ये
उलेतायेत दो वेस्नी ।

पोदोब्नो प्तीचक्ये ब्येज़्ज़ाबोतनोय,

औ, उस शोक का कारण रहस्यपर्ण
समझने में बिलकुल असमर्थ था।
रहती मृगनयनी ज़ेम्फीरा अब उसके साथ,
वह है अब निवासी स्वच्छन्द संसार का।
उन पर अब दिनकर की रश्मि उल्लासपूर्ण
मुस्करा रही है दिव्य दीप्ति यौवन की लिये।
पर यह क्या ? क्यों उसका उर धड़क रहा ?
कौन-सी चिन्ता कर रही है आज व्यस्त उसे ?

दिव्य पक्षी नहीं जानता यह रंचमात्र
चिन्ता क्या होती है; श्रम क्या होता है;
सहकर महान् कष्ट नहीं रचता है वह अपना चिरस्थायी नीड़;
बड़ी-बड़ी रातों को बिता देता है वह सोकर शाखाओं पर;
होता है प्रभात, लाल सूर्य उदित होता है,
सुनता है पक्षी वह दिव्य निनाद तब।
पंख फड़फड़ाता है, गाता है मधुर गान।
बीतता बसन्त ऋतुराज और उसके बाद
गर्मी भी आती है और चली जाती है,
छाती है धुन्ध तब, दारुण हेमन्त तब
लाता है हिम-पतझड़ को अन्त में।
जन-जन उदास होता, होते सब लोग दुखी;
किन्तु वह पक्षी तब दूरवर्ती देशों को,
गरम प्रदेश में नीले सागर के पार,
दूसरे बसन्त-काल तक को उड़ जाता है।

वैसे ही वह भी निश्चिन्त पक्षी के तुल्य,

ई श्रोन, इजग्नान्नीक पेरेल्यौतनी,
गनेश्वा नाश्चौभनोवो ने जनाल
ई नी क चेमू ने प्रीवीकाल ।
येमू बेजद्दो बीला दोरोगा,
बेजद्दो बीला मोचलेगा सेन्;
प्रोस्तूबशी पोउम्रू, स्वोय द्योन्
श्रोन ओतदावाल ना वोल्यू बोगा ।
ई श्रीजनी ने मोग्ला श्रेवोगा
स्मूतीत्य् येवो सेरदेचनू लेन् ।
येवो पोरोय बोलशेबनोय स्लावी
मानीला दालनाया ज्वेज्दा;
नेभ्रवाग्नो रोसकोश् ई आबावी
क नेमू यावल्यालीस् इनोग्दा;
नाद श्रोवीनोकोय गोलोवोय्
ई प्रोम नेरेदको प्रोखोताल;
नो श्रोन बेस्पेचनो पोद प्रोजोय्
ई व श्योम्रो यास्नोये द्रेमाल ।
ई भिल, ने प्रिजनावाया व्लास्ती
सुद्वी, कोवारनोय ई स्लेपोय ।
नो बोझ्ये ! काक इग्राली स्त्रास्ती
येवो पोस्लूशनोयू दुशोय !
स काकीम वोलनेनियेम् किपेली
व येवो इज्मूचेन्नोय पूदी !
दावनो ल्, नावोल्गो ल् उस्मीरेली ?
श्रोनी प्रोस्तूस्सा : पोगोदी !

झेम्फीरा

स्काभ्री, मोय द्रुग : ती ने भालेयेश्

देश-बहिष्कृत उड्डयनशील पक्षी-सा,
सुखमय सुरक्षित नीड़ आदि का न अभ्यस्त बना।
चारों दिशाएँ उसके हेतु थीं खुली हुईं,
रात काटने के लिए छत्त थी आकाश की;
उठकर प्रभात में दिन की चिन्ताएँ सब
दैवेच्छा पर छोड़ देता था।
जीवन की दैनिक चिन्ताएँ न कर पाईं
विचलित उसके अलस मन की शान्त मुद्रा को।
कभी-कभी उसको दिव्य दैवी प्रताप का,
आकर्षित करता था दूर देशवर्त्ती तारा;
कभी-कभी सुख-ऐश्वर्य औ' विलास के,
स्वप्न लहराते थे उसके अन्तस्तल में,
और प्रायः एकाकी असहाय के ऊपर
गरजते थे घन घनघोर निबिड़;
किन्तु तूफ़ानों में रहता था अविचल वह,
और सुखद ऋतु को पा सोता था जी-भर।
और कभी माना नहीं करता था क्षण-भर को
अन्धे दुर्दान्त दुर्दैव की सत्ता वह।
किन्तु हा विधाता, कैसी दुर्दम लालसाएँ
खेलती थीं उसकी दृढ़ अनुवर्त्ती आत्मा से,
कैसे तीव्र वेग से वे झकझोरती थीं
उसके उद्विग्न विभ्रान्त अन्तस्तल को।
क्या अब वे चिर से चिरकाल तक को शान्त हुईं?
नहीं, वे जागेंगी। करिए प्रतीक्षा कुछ!

ज़ेम्फीरा

बता मेरे मित्र, तू व्यथित तो होता नहीं

ओ तोम, क्तो ओसिल नापसेग्दा ?

आलेको

क्तो-भ्‌ ओसिल या ?

ज़ेम्फीरा

ती राज़ुमेयेश :

ल्यूद्येय ओतचीभ्ऩी, गोरोदा।

आलेको

ओ च्योम झालेत्‌ ? कोग्दा ब्‌ ती ज़्नाला,
कोग्दा बी ती वोओब्राझाला
नेवोल्यू दूशनीख़ गोरोदोव !
ताम ल्यूदी, व कूचाख़ ज़ा ओग्रादोय,
ने दीशात उत्रेन्‍न्येय प्रोख़्लादोय,
नी वेशनीम्‌ ज़ापाख़ोम्‌ लुगोव;
ल्युब्वी स्तीद्यात्सा, मीसली गोन्यात,
तोरगूयुत वोल्येयू स्वोयेय,
ग्लावी प्रेद इदोलामी क्लोन्यात
ई प्रोस्यात देनेग दा त्सेप्येय।
क्तो ब्रोसिल या ? इज़्मेन वोल्नेन्ये,
प्रेदरास्सुझ्देन्नीइ प्रीगोवोर,
तोल्पी ब्येज़ुमनोये गोनेन्ये
ईली ब्लीस्तातेल्नी पोज़ोर।

ज़ेम्फीरा

नो ताम ओग्रोम्नीय पालाती,
ताम राज़नोत्स्वेतनीये कोवरी,
ताम ईग्री, शूम्नीये पीरी,
उबोरी देव ताम ताक बोगती !...

उसके लिए, जो तू सदा के लिए छोड़ आया है ?

आलेको

क्या छोड़ा है मैंने ?

ज़ेम्फीरा

नहीं तुम समझे;
लोग अपने देश के, अपने नगर को !

आलेको

किस के हित होऊँ मैं व्यथित ? यदि तू जानती,
कर सकती यदि कुछ भी अनुमान तू—
घने बसे हुए निबिड़ अनुन्मुक्त नगरों को,
कैसे वहाँ लोग भिच-भिच रहते हैं सीमा में,
प्रातः शीत पवन का उपभोग नहीं कर सकते,
अथवा मधुऋतु में चरागाहों की सुगन्धि का;
प्रेम में लजाते, देते उभरने उमंगों को न,
करते हैं सौदा वे अपनी स्वच्छन्दता का ।
मूर्त्तियों के सम्मुख निज मस्तक झुकाते हैं,
चाहते हैं धन, शृंखलाएँ वरदान में !
क्या छोड़ा है मैंने ? कपटपूर्ण संसार,
पक्षपात-भावना से भरा हुआ निर्णय,
और जनसमूह का अकारण दमन, अत्याचार,
लांछन-प्रताड़ना का अतिशय दीप्त विचार ।

ज़ेम्फीरा

किन्तु हैं वहाँ पर खड़े अत्युत्तुंग शुभ्र सौध,
रंग-बिरंगे ग़लीचे वहाँ, क्रीड़ा आमोद-मनोरंजन के साधन बहु,
सुरापान, कोलाहलयुक्त भव्य भोज
और वे युवतियों के बहुमूल्य परिधान !

आलेको

यतो शुम वेसेलीइ गोरोद्स्किख ?
गद्रो न्येत ल्यूबवी, ताम न्येत वेसेलीइ ।
आ देवी···काक ती लुच्श्ये इख
इ व्येज नारयादोव दोरोगीख,
व्येज झ्मयुगोव, व्येज ओझ्रेलीइ !
मे इज़मेनास्, मोय नेझ्नी द्रुग,
आ या··· श्रोवनो मोयो झ्लान्ये
स तोबोय देलीत्य् ल्यूबोव दोसुग
ई दोब्रोवोलनोय इज़ग्नान्ये ।

स्तारीक

ती ल्यूबिश नाश, खोत्य् ई रोझ्दोन
सेवी बोगातोवो नारोदा ।
नो ने पसेग्वा मीला स्वोबोदा
तोमू, क्तो क नेग्ये प्रीउच्योन ।
मेझ्दु नामी येसत्य् ओदनो प्रेदान्ये :
स्सारयेम् कोग्दा-तो सोस्लान बील
पोलूदन्या झीतेल् क नाम व इज़ग्नान्ये ।
(या प्रेझ्दे ज्नाल, नो पोज़ाबील
येवो मुद्रेनोये प्रोज्वान्ये ।)
योन बील ऊझ्ये लेतामी स्तार,
नो म्लाद ई झीव दुशोय नेज्लोबनोय—
ईमेल योन पेस्येन दीवनी दार
ई गोलोस, शूमू वोद पोदोब्नी ।
ई पोल्युबीली फ्स्ये येवो,
ई झ़िल ओन ना ब्रेगाख दुनाया,
ने ओबीझाया नीकोवो,

आलेको

नगर के ये प्रमोद-कोलाहल निःसार,
वहाँ प्रेम का न नाम, है न तनिक उल्लास।
और युवतियाँ, वे···तू उनसे कहीं सुन्दर है
बिना उन अतिमहार्थ मंडन परिधानों के,
बिना उन मोतियों की लड़ियों के, बिना कंठहारों के।
मेरे निसर्गरम्य सुमन सुकुमार मित्र,
मत तुम बदल देना निज उर का भाव यह।
और मैं···मेरी बस एक-मात्र कामना है,
चाहता हूँ भागी मैं बनना तव प्रेम का,
तेरे अवकाश की घड़ियों का,
और तेरे उन्मुक्त स्वच्छन्द भ्रमण का!

बूढ़ा

तू करता है हमें प्यार, भले पैदा तू
हुआ है उन विपुल समृद्धिशालियों के बीच।
किन्तु सदा भाती नहीं यह स्वच्छन्दता उसको,
जो विपुल वैभव में पला है;
कही जाती है एक कहानी हमारे यहाँ:

एक बार ज़ार द्वारा होकर प्रवासित
दक्षिण-निवासी एक भाग आया हमारे बीच।
(याद था पहले, अब भूल रहा हूँ मैं उसका नाम क्या था)
प्रौढ़ आयु का था वह, आत्मा थी निश्छल,
और हृदय था उसका भरा यौवन-उमंगों से।
गीतों का उसको मिला दिव्य वरदान था,
कंठ था सरिता की सुमधुर कल-कल की भाँति।
सहज प्यार उसे सब लोग करने लगे,
रहता था वह डेन्यूब के किनारे पर।
करता नहीं था वह किसी का भी तिरस्कार,

ल्युद्येय रासकाजामी ल्लेन्याया ।
ने राजउमेल ओन नीचेवो,
ई स्लाव ई रोबोक बील, काक वेती;
चुभ्मीये ल्यूदी जा नेवो
स्वेरयेय ई रीब लोवीली व सेती;
काक म्योरजला बीस्त्राया रेका
ई जीम्नी बीलरी बशेवालो,
पुशीस्तोय कोभ्रूयेय पोक्रीवालो
ओनी सव्यातोवो स्तारीका;
मो ओन क जावोताम भ्रीजनी बेदनोय
प्रीवीकनुत्य नीकोग्दा ने मोग;
स्कीतालसा ओन इस्सोखशी, ब्लेदनी,
ओन गोवोरील, च्तो ग्नेवनी बोग
येवो काराल जा प्रेस्तुपलेन्ये···
ओन भ्रदाल : प्रीद्योत लो इज्बावलेन्ये ।
इ फ्स्यो, नेस्चास्तनो, तोस्कोवाल,
ब्रोद्या पो बेरेगाम दुनाया,
दा गोर्की स्लेजी प्रोलीवाल,
स्वोय दालनी ग्राद वोस्पोमीनाया,
ई जावेश्चाल ओन उमीराया,
च्तोबी ना युग पेरेनेस्ली
येवो तोस्कूयूश्चीये कोस्ती,
ई स्मेरत्यू — चुभ्रदोय सेई जेम्ली
ने उस्पोकोयेन्नीये गोस्ती ।

आलेको

ताक वोत सुद्बा त्वोइख सीनोव,

मुग्ध किया था उसने कथाओं से लोगों को।
वह था निरीह, निर्लिप्त औ' निरासक्त,
बच्चों की भाँति था वह कातर और दुर्बल,
परिचित-अपरिचित सभी लोग उसके हित
मछलियाँ आदि पकड़कर लाते थे जालों में अपने।
जब वेगवाहिनी नदी जम जाती थी,
चलती थीं जब भीषण बर्फ़ की आँधियाँ,
तब वे फरवाले चमड़े से ढाँकते थे
उस पुण्यात्मा बूढ़े के शरीर को।
पर वह इन ग़रीबों की निश्छल देख-भाल का,
कभी भी न क्षण-भर के लिए अभ्यस्त बना।
काटता रहा वह चुपचाप अपने दिन,
हो गया बिल्कुल ही सूखा और पीला।
कहता था—ईश्वर ने होकर के क्रुद्ध यह
उसे किसी भारी पाप का ही दण्ड दिया है!
करता था प्रतीक्षा क्या कभी मिलेगी मुक्ति ?
और वह अभागा हो दुःखी, संतप्त अति
घूमता रहता था डेन्यूब-तट पर,
खूब फूट-फूट कर आँसू बहाता था
जब आती थी याद दूरस्थ नगर की।
मरते समय भी वह यह ही कह गया कि
दक्षिण दिशा की ओर ले जाई जाएँ
वेदना-निमज्जित अस्थियाँ ये उसकी—
इस धरती के उस पराए औ' अशान्त अति
अतिथि की—होने पर उसकी मृत्यु।[1]

आलेको

ऐसा था भाग्य तेरे सपूतों का रोम,

---

१. प्राचीन रोम के कवि पुब्लीई ओविदीई नाज़ोन (ईसा पूर्व '४३) को सम्राट आवगुस्त ने देश-निकाला दे दिया था। वह प्रवास में डेन्यूब-नदी के किनारे ही मर गया था।

ई त्याभ़को प्ल्याश्त्येत रेवयौत
ई त्सेप् वोकूग्नयू प्रोश्यौत ।
ना पोसोल्ल ओपेरशीस् वोरोभ़नी,
स्तारीक सेनीवो व बूबनी ब्यौत,
आलेको स पेन्येम् ग्वेरया वोवीत,
ज़ेम्फीरा पोसेल्यान ओबखोवीत
ई वान् इस्न वोल्नय् बेरयौत ।
मास्ताम्येत मोच्; ओनी फस्ये ओये
वारयात नेभ़ातोये पशेनो;
स्स्तारीक उस्नुल·····ई फस्यो व पोकोये,
व शात्र्ये ई तोखो ई त्यौम्नो ।

स्तारीक ना वेश्नयेम् सोलन्त्स्ये ग्रेयेत
उभ़ ओस्तीवायूश्चयू फोव;
ऊ ल्यूलकी वोच् पोयौत ल्युबोव् ।
आलेको वनेम्ल्येयेत ई ब्लेदन्येयेत ।

ज़ेम्फीरा

स्तारी मुभ़, ग्रोज़नी मुभ़,
रेभ़् मीन्या, भ़गी मीन्या ।
या त्व्योर्दा; ने बोयूस्
नी नोभ़ा, नी ओग्न्या ।

नेनावीभ़ू तेब्या,
प्रेज़ीरायू तेब्या;
या ल्यूगोवो ल्यूब्ल्यू,
उमीरायू ल्यूब्या ।

समक्ष नाचता है, गुर्राता है पीड़ा से,
और फिर चबाता है कष्टद जंजीर को।
बूढ़ा भी अपनी सफ़री लाठी को टेककर
अलसता से धीरे-धीरे डुग्गी बजाता है।
आलेको गीत गा-गा रीछ को नचाता है,
जेम्फीरा दर्शकों के पास घूमा करती है,
स्वेच्छा से दिए गए पैसे उनसे लेने को।
हुई रात, तीनों वे मिलकर पकाते हैं
बिना कुटे हुए बस बाजरे के दाने कुछ।
सो गया लो बूढ़ा···और शेष सब शान्त है,
तम्बू में नीरवता और बस अँधेरा है।

बूढ़ा बसन्त के सूरज की धूप में,
शीतल पड़ा हुआ रक्त निज तपाता है,
पालने के पास एक गीत गाती जेम्फीरा,
ध्यान से सुनता है आलेको सब,
और फिर सुनकर गीत वह पीला पड़ जाता है।

जेम्फीरा

"अरे भयंकर पति, बूढ़े पति, औ' मतिमंद गँवार,
मुझे जला दे या कर दे असिधार गले के पार!
मैं दृढ़ हूँ, डरती न किसी से, गोली या तलवार,
तुझसे करती घृणा अपरिमित, कहूँ यही सौ बार।
मर जाऊँ मैं किन्तु कहूँगी : करूँ अन्य को प्यार···!



ज़ेम्फीरा से आलेको का प्रेम-निवेदन.

मूल

आलेको

मोलची। म्न्ये पेन्ये नादोयेलो,
या दीकीख पेस्येन ने ल्युबल्यू।

ज़ेम्फीरा

नेल्यूबीश ? म्न्ये काकोये देलो !
या पेस्न्यू द्ल्या सेब्या पोयू।
रेभ्क़ मीन्या, भ्क़गी मीन्या,
ने स्काभ्क़ू नीचेवो;
स्तारी मुभ्क़, ग्रोज़नी मुभ्क़,
ने उज़नायोश येवो।

अनुवाद

आलेको

बंद कर बस अब, तंग आगया हूँ मैं
तेरे इस गीत से, मुझे है पसन्द नहीं गीत यह जंगली ॥

ज़ेम्फीरा

यदि है पसन्द नहीं, तो क्या मुझे इससे ?
मैं तो गाती हूँ गीत यह अपने लिए :
मुझे जला दे या करदे असिधार गले के पार,
अरे ! भयंकर पति, बूढ़े पति, औ' मतिमंद गँवार !
मैं न कहूँगी कुछ, औ' न वह जानेगा किसी प्रकार,

ओन स्वेभ्र्येये वेस्नी,
भारच्ये लेत्नेवो दून्या;
काक ओन मोलोद ई स्मेल !
काक ओन ल्युबीत मीन्या !
काक लास्काला येवो
या व नौचनोय तीशीन्ये !
काक स्मेयालीस् तोग्दा
मी त्वोयेय सेदीन्ये !
आलेको
मोल्‌ची, ज़ेम्फीरा ! या दोवोल्येन···
ज़ेम्फीरा
ताक पोन्याल पेस्न्यू ती मोयू ?
आलेको
ज़ेम्फीरा ! ··
ज़ेम्फीरा
ती सेरदित्सा वोल्येन;
या पेस्न्यु प्रो तेब्या पोयू ।
(उखोदीत ई पोयोत। स्तारी मुझ् ई प्रौच···)
स्तारीक
ताक, पोम्न्यू — पोमन्यू पेस्न्या एता
वो व्रेम्या नाश्ये स्लोझ्ना,
उभ्र्ये दावनो व ज़ाबावू स्वेता
पोयोत्सा मेझ् ल्यूद्येय ओना ।
कोचूया न स्तेप्याख कागूला,
येयो बीवालो व ज़ीमन्यू नौच्
मोया पेवाला मारीउला,
पेरेद ओग्नयेम् काचाया दौच् ।

वह वसन्त से अधिक तरुण तरुणाई का भंडार !
उसमें ग्रीष्म से अधिक उष्ण भरा है अतुलित प्यार,
वह यौवन की सुषमा का औ' साहस का आधार !
अरे ! मुझे करता है वह कितना दिन-प्रतिदिन प्यार,
मैंने चूमा उसे, बज उठे निशि के नीरव तार,
हम विहँसे तेरे सफेद बालों पर सौ-सौ बार !

आलेको

बन्द कर, ज़ेम्फीरा मैं बहुत······

ज़ेम्फीरा

तो फिर क्या समझ गया गीत तू मेरा यह ?

आलेको

ज़ेम्फीरा !······

ज़ेम्फीरा

तू यदि उत्तेजित होता है क्रोध में, तेरी इच्छा,
मैं गीत यह तेरे ही विषय में गा रही हूँ।

(बाहर निकल जाती है और गाती है : "अरे ओ बूढ़े पति······")

बूढ़ा

आता है याद मुझे, गीत यह
रचा गया था हाँ, हमारे ही काल में,
चिरकाल से लोक-मनोरंजन-हित
गाया करती है वह उसे जन-समुदाय में।
कागुल[1] के रम्य मैदान में विचरते हुए,
शायद हेमन्त की सुनसान रात में
गाया था मेरी मारिउलाने इसको,
आग के सामने बच्ची को लोरियाँ दे।

---

१. एक नदी।

व उम्ये मोयोम् मिनूवशी लेता
चास ओत चासू त्येमन्येय, त्येमन्येय;
नो ज़ारोनीलास् पेस्न्या ऐता
ग्लूबोको व पाम्याती मोयेय ।

फ्स्यो तीखो; नौच् । लूनोय उक्राश्येन
लाज़ूरनी यूगा नेबोस्क्लोन ।
स्तारीक ज़ेम्फीरोय प्रोबुभ्क्योन ।
"ओ मोय ओत्येत्स ! आलेको स्त्राश्येन ।
पोस्लूशाई : स्कवोज़ त्याभ्क्चौली सोन
ई स्तोन्येत इ रीदायेत ओन ।"

स्तारीक

ने त्रोन् येवो । ख्रानी मोलचान्ये ।
स्लीखाल या रुस्कोये प्रेदान्ये :
तेपेर् पोलुनोश्चनोय पोरोय
ऊ स्प्याश्चेवो तेस्नीत दीखान्ये
दोमाशनी दूख; पेरेद ज़ारयेय
उखोदीत ओन । सीदी सो म्नोय ।

ज़ेम्फीरा

ओत्येत्स मोय ! शेपच्यौत ओन : ज़ेम्फीरा !

स्तारीक

तेब्या ओन इश्चयौत इ वो सन्ये :
ती द्ल्या नेवो दोरोभ्क्ये मीरा ।

ज़ेम्फीरा

येवो ल्यूबोव् पोस्तीला म्न्ये,
म्न्ये स्कूचनो; सेरद्त्स्ये वोली प्रोसीत—

जिप्सी

मेरे मस्तिष्क में बीते वर्षों की याद,
धुंधली-ही-धुंधली होती जा रही है प्रतिपल;
किन्तु जैसे गीत यह छाप एक अमिट-सी
छोड़कर स्थिर-सा हो गया है मस्तिष्क में ।

नीरव निशीथ है, छिटक रही चन्द्रकला,
दक्षिण के नीलवर्ण क्षितिज के छोर पर ।
ज़ेम्फीरा ने बूढ़े को जगाकर कहा :
"बापू, आलेको, हा ! भयावना-सा लगता है ।
सुनो, कैसा बुरा सपना वह देख रहा,
कैसे कराहता है औ' आहें भरता है वह ।"

बूढ़ा

मत छेड़ तू उसको, चुपचाप बैठ मौन साध;
मैंने सुन रक्खी है रूसी कथा एक :
आधी रात को भूत सोने वाले के गले को दबाता है,
पौ फटने से पूर्व वह चला जायगा !
बैठ जा तू मेरे पास ।

ज़ेम्फीरा

बापू, अरे ! बुदबुदा रहा है वह—'ज़ेम्फीरा' !

बूढ़ा

तुझे वह अपने सपने में भी खोज रहा है,
तू उसे दुनिया से भी अधिक प्यारी है !

ज़ेम्फीरा

ठंडा-सा कर दिया है मुझे उसके प्यार ने,
मन नहीं लगता मेरा, उर चाहता स्वच्छन्दता है,

उज़् या···नो तीश्ये ! स्लीशीश् ? ओन
द्रूगोये ईम्या प्रोइज़्नोसीत···

स्तारीक

च्या ईम्या ?

ज़ेम्फीरा

स्लीशीश् ? ख़्रीपली स्तोन
ई स्क्रेझ़ेत यारी !···काक उझ़ास्नो !···
या राज़्बूझ़ू येवो···

स्तारीक

नाप्रास्नो,
नोच्नोवो दूख़ा ने गोनी—
उइद्योत ई साम् ।

ज़ेम्फीरा

ओन पोवेर्नुल्सा,
प्रीवस्ताल, ज़ोव्योत मीन्या ··प्रोस्नुल्सा
ईदू क नेमू—प्रोश्चाय, उस्नी ।

आलेको

ग्द्ये ती बीला ?

ज़ेम्फीरा

स ओत्सोम् सीदेला ।
काकोय-तो दूख तेब्या तोमील;
वो स्न्ये दूशा त्वोया तेरपेला
मूचेन्या; ती मीन्या स्त्राशील :
ती, सोन्नी, स्क्रेझ़ेताल ज़ुबामी
ई ज़्वाल मीन्या ।

आलेको

म्न्ये स्नीलास् ती ।
या वीदेल बूद्तो मेझ़्दू नामी···

मैं तो······किन्तु ज़रा धीरे-धीरे···
सुनते हो ? नाम ले रहा है वह अब कोई दूसरा···!

बूढ़ा

किसका नाम ?

ज़ेम्फीरा

सुनते हो ? कैसे वह, कितनी कठोर औ'
प्रचण्ड उत्तेजना में दांत कैसी तेज़ी से पीस रहा अपने ?
आह, कितना भयंकर यह मैं उसे जगाती हूँ···

बूढ़ा

होगा यह व्यर्थ,
तू मत भगा उस रात के भूत को,
वह अपने आप ही चला जायगा।

ज़ेम्फीरा

लो उसने करवट बदली, वह जाग गया,
उठ खड़ा हुआ, बुला रहा है मुझे···
उसके पास जाती हूँ—अच्छा विदा सो जाओ।"

आलेको

कहाँ थी तू ?

ज़ेम्फीरा

बैठी थी पिता के पास।
कोई एक भूत सपने में तुझे सता रहा था;
स्वप्न में तेरी आत्मा ने थी सहन की वेदना !
तूने मुझे डरा दिया : पीस रहा दांत था तू अपने इस सपने में
और बार-बार मेरा नाम ले बुला रहा था !

आलेको

आज तू मेरे इस सपने में थी आई।
मैंने देखा, आह ! कैसे हमारे बीच··

या बीवेल स्त्राशनीयें मेचती !

जेम्फीरा

ने वेद् लुकावीम् स्नोविदेन्याम् ।

आलेको

प्राज, या मे वेद्यू नोचेमू :
मी स्नाम्, मी स्लाब्कीम उवेरेन्याम्,
मी शाग्ऊ्यें सेरबत्सू — स्वोयेमू ।

— ——

स्तारीक

ओ क्यौम्, क्येजउमेत्स मोलोवोय,
ओ क्यौम् वक्वीशायेश ती पस्येचास्नो ?
व्येस् ल्यूदी वोल्नी, नेबो यास्नो
ई भ्ऊ़योनी स्लावयात्सा क्रासोय ।
ने प्लाच् : तोस्का तेब्या पोगुबीत ।

आलेको

ओत्येत्स । ओना मीन्या ने ल्युबीत ।

स्तारीक

उतेश्सा, ड्रुग : ओना दीत्या ।
स्वोयें उनीन्ये क्येअ्रास्सूदनो :
ती ल्युबीश गोरेस्तनो ई त्रूद्नो,
आ सेरदत्स्ये अ़ेन्स्कोय — शुत्या ।
वग्ल्यानी : पोद ओतदालेन्नीम् स्वोदोम्
गुल्यायेत वोल्नाया लूना;
ना वस्यू प्रीरोदू मीमोखोदोम्
राव्नो सीयान्ये ल्योत ओना ।
जाग्ल्यान्येत व ओब्लाको ल्युबोये,
येगो, ताक पीश्नो ओझारीत —
ई वोत उक्र्ऊ् पेरेश्ला व द्रुगोये;

अरे, मैंने बहुत ही भयंकर स्वप्न देखा है !

ज़ेम्फ़ीरा

मत विश्वास कर मनहूस सपने पर ।

आलेको

मैं न करता किसी बात पर हाय ! विश्वास,
न तो सपनों पर, न मीठे आश्वासनों पर,
औ' न तेरे इस कुटिल हृदय पर ही !

बूढ़ा

अरे नादान, नासमझ युवक,
पल-पल आहें भर रहा इस भाँति ?
लोग यहाँ हैं अबाध, उन्मुक्त, स्वच्छन्द,
ऊपर यह कितना सुनिर्मल आकाश है,
युवतियाँ यहाँ की हैं प्रसिद्ध सौन्दर्य-हित,
रो मत अभागे; नहीं तो यह वेदना तुझको नष्ट कर देगी ।

आलेको

पिता, नहीं करती है प्यार वह मुझसे !

बूढ़ा

शान्त हो आ मित्र, अभी वह निरी बच्ची है,
बिल्कुल व्यर्थ है तेरी यह उदासी आज ।
तेरे प्रेम में है व्यथा और अथक लगन,
और स्त्री-हृदय सहज होता है विनोद-चपल ।
देख, वहाँ नीले पूर्ववर्त्ती महराब के,
वह स्वच्छन्द चन्द्र चन्द्रिका बिखेर रहा;
और वह विचरता हुआ नीले नभस्तल पर,
फेंकता समस्त प्रकृति पर निज प्रभा एकरूप ।
झाँकता है जब कभी एक बादल में,
उसको क्षण-भर कितना उज्ज्वल कर देता है !
लो अब वह दूसरे उस बादल में चला गया;

ई तो नेदोल्गो पोसेतीत ।
क्तो नेस्तो व नेब्ये येय उकाभ्र् येत
प्रीमोल्व्या : ताम ग्रोस्तानोवीस् ।
क्तो सेरदत्सू यूनोय वेची स्काभ्र् येत :
ल्यूबी ग्रोब्नो, ने इज़मेनीस् ।
ज़तेइस्ता ।

आलेको

काक ग्रोना ल्यूबीला !
काक, नेश्नो प्रेक्लोन्यास् को म्न्ये,
ग्रोना, व पुस्तीन्नोय तीशीन्ये,
चासी नोच्नीये प्रोवोदीला !
वेसेल्या वेस्कोवो पोल्ना,
काक चास्तो मीलीम् लेपेताम्येम्
इल् उपोईतेल्नीम् लोबज़ान्येम्
मोयू ज़ादूमचीवोस्त्य् ग्रोना
व मिनूतू राज़ग्रोग्नात्य् उमेला !…
ई क्तो भ्र् ? ज़ेम्फीरा नेवेरना ?
मोया ज़ेम्फीरा ओखलादेला !…

स्तारीक

पोस्लूशाय : रास्स्काभ्र् तेब्ये
या पोवेस्त्य् प्रो सामोम् सेब्ये ।
दावनो, दावनो, कोग्दा दुनाय्
ने उग्रोझाल इश्यो मोस्काल्
(वोत वीदीश : या प्रीपोमीनाय्,
आलेको, स्तारुयू पेचाल्)—
तोग्दा बोयालीस् मी सुलताना;
या प्रावील बुद्भ्राकोम पाशा

और वहाँ पर भी बस एक क्षण-भर के हेतु ।
कौन उसे नभ में स्थिर स्थान बता सकता है ?
और कह सकता है उससे : बस यहीं ठहर ।
कौन कह सकता है युवती के हृदय से :
एक से ही प्रेम कर तू, बेवफ़ाई मत कर ।
अतः तू शान्त हो जा ।

आलेको

आह ! वह पहले थी कितनी गाढ़ प्रेममयी,
कैसी स्निग्धता से झुक जाती थी मेरी ओर;
ऊसर मैदान में उस निशीथ निर्जनता में,
उसने वे मधुर-मिलन घड़ियाँ बिताई हैं !
शैशव के मुग्ध उल्लास-भरे अपने
उन तुतुलाहट औ' स्नेह-सने वचनों से,
अथवा उस मदविह्वल चुम्बन-परम्परा से
मेरी चिन्ताओं का भार पल-भर में
दूर भगा सकने में सर्वथा समर्थ थी ।
और अब ? ज़ेम्फीरा हो गई है बेवफ़ा !
मेरी ज़ेम्फीरा है ठण्डी पड़ गई अब !

बूढ़ा

सुन, तुझे सुनाता हूँ कथा अपने ही बारे में :
(अरे, मुझे याद है आलेको, गाथा वह पुरानी घोर व्यथा भरी)
बहुत समय हुआ जब डेन्यूब को
मास्को वालों का कुछ भी नहीं भय था,
जब डरते थे हम सुलतान से
और राज्य करता था पाशा बुजाक का[1]

१. बेसारबिया का दक्षिणी भाग, जो १८१२ से पूर्व तुर्कों के अधिकार में था ।

स वीसोकिख बाश्येन ग्राकेरमाना—
या मोलोब बील्; मोया बूशा
व तो ब्रेम्या रावोस्नो कीपेला,
ई मी ब्रोबूला व कुशयाख मोईख
इश्चयो सीवेन्का में ब्रेलेला;
मेब्र्झू कासाबित्स मोलोवीख
ज़ोबला बीला···ई वोल्नो येयू,
काक सोलनत्स्येम्, ल्युबोवालसा या
ई माकोम्येत्स नाज़्वाल मोयेय···

ग्राख, बीस्त्रो मोलोदोसत्य् मोया
स्वेज़्दोय पादूचेयू मेल्कनूला !
नो ती, पोरा ल्यूब्वी, मीनूला
इश्चयो बीस्त्रयेये : तोल्को गोद
मीन्या ल्युबीला मारीउला ।

ग्रोबनाझ़ावी क्लिज़ कागुल्स्किख वोद
मी चूझ़वी ताब्रोर पोवस्त्रेचाली,
त्सीगानी त्ये, स्वोई शात्री
राज़्बीव क्लिख मागिला उ गोरी,
नौची स्तेस्तये नोचेवाली ।
ओनी उशली या ब्रेत्यू नोच्,
ई, ग्रोस्या मालेन्कूयू दोच्,
झ़ाला या गोमी मारीउला ।
या मीरनो स्पाल; ज़ारया ब्लेस्नूला;
प्रोसनूलसा या, पोद्रुगी न्येत !
ईश्चू, जोवू — ग्रोपाल ई स्लेद !

आकेरमानकी[1] ऊँची अटारी से।
तब मैं जवान था, भावनाएँ मेरी
यौवन के झूले पर करती अठखेलियाँ थीं,
तब मेरी (आज इस श्वेत) केश-राशि में
एक भी सफेद बाल उग नहीं आया था।
तब नवयौवना रम्य सुन्दरियों में
एक थी'''और काफ़ी समय तक उसकी
मनमुग्ध करता रहा अतुलित प्रशंसा में,
तुलना स्निग्ध रवि-बिम्ब से करके उसकी;
और फिर अन्त में एक दिन कह सका उसको मैं अपनी'''!
आह! वह जवानी मेरी शीघ्र ही
टूटते सितारे-सी चमकी, चली गई!
और फिर वे प्रेम की घड़ियाँ और शीघ्रता से बीत गईं;
केवल एक वर्ष तक प्रेम किया मुझको मेरी मारिउला ने।

एक बार कागुल नदी के निकट ही हमारी
भेंट हुई जिप्सियों की एक अन्य टोली से।
उन जिप्सियों ने गाड़े तम्बू अपने भी
हमारे तम्बुओं के पास ही पहाड़ी पर,
और बिताईं दो रातें हमारे साथ।
फिर वे चले गए तीसरी रात को,
छोड़कर अपनी नन्ही-सी एक बच्ची को
मारिउला भी उन्हीं के साथ चली गई।

सुख से सोया था मैं, फटी पौ,
जागकर देखा तो साथी का पता न था।
ढूँढ़ा, बुलाया, पर निशान तक था मिट चुका।

---

१. बेसारबिया में एक नगर, जहाँ तुर्कों का क़िला था।

तोस्कूया प्लाकाला ज़ेम्फीरा,
ई या आप्लाकाल — स एतिख पोर
पोस्तीली म्न्ये फस्ये देवी मीरा;
मेझ़ नीमी नीकोग्दा मोय ज़्ज़ोर
ने वीबीराल सेब्ये पोद्रुगी,
ई ओदीनोकीये दोसुगी
उझ़्ये नी स क्येम् या ने देलील ।

आलेको

या काक झ़्ये ती ने पोस्पेशील
तोतचास वोस्लेद नेब्लागोदारनोय
ई खिश्चीनीकाम ई येय, कोवारनोय,
किन्झ़ाला वो सेरद्त्स्ये ने वोन्ज़ील ?

स्तारीक

क चेमू ? वोल्न्येये प्तीत्सी म्लादोस्त्य्,
क्तो ब सीलाख उदेरझ़ात्य् ल्युबोव् ?
च्रेदोयू फ्स्येम् दायोत्सा रादोस्त्य्;
च्तो बीलो, तो ने बूदेत स्नोव् ।

आलेको

या ने ताकोव । न्येत, या ने स्पोर्'या
ओत प्राव मोईख ने ओतकाझ़ूस् ।
इली खोत्य् म्श्चेन्येम् नास्लाझ़ूस् ।
ओ न्येत ! कोग्दा ब नाद् ब्येज़्द्नोय मोर्'य,
नाइदोल या स्प्याश्चेवो व्रागा,
कल्यानूस्, ई सुत मोया नोगा
ने पोश्चादीला बी ज़्लोदेया;
या ब वोल्नी मोर्'या, ने ब्लेदनेया,
ई ब्येज़ाश्चीत्नोवो ब तोल्कनूल:
च्नेज़ापनी उझ़ास प्रोबुझ़्देन्या
स्वीरेपीम् स्मेखोम् उप्रेकनूल,

दुःख से जेम्फीरा रोई और मैं भी रोया।
अब तो भाती नहीं संसार की सुन्दरियाँ,
और उनमें से कभी भी मेरे नयनों ने
अपने लिए कोई भी साथी चुना नहीं।
और फिर अपनी एकांत की घड़ियाँ
अब तक किसी से भी नहीं बाँटी।

आलेको

और फिर क्यों नहीं जल्दी से तूने
तत्क्षण ही पीछा किया झटपट उस कृतघ्न का,
और उस अपहर्ता की, और उस बेवफ़ा की
छाती में क्यों नहीं घोंप दिया तूने छुरा ?

बूढ़ा

क्यों यह करता मैं ?
तरुणाई पक्षी से भी अधिक स्वच्छन्द है !
कौन है समर्थ प्रेम को बांधकर रखने में ?
बारी-बारी से देता वह सबको प्रसन्नता है;
और फिर हो गया जो-कुछ, सो हो गया।

आलेको

नहीं, मैं तो ऐसा नहीं हूँ।
मैं तो अधिकार अपना बिना संघर्ष के
छोड़ नहीं सकता हूँ।
अथवा मैं कम-से-कम बदला लेने का आनन्द तो उठा लूँगा।
ओ ! नहीं, कभी भी यदि अथाह सागर के तल पर,
पा लेता हूँ अपने सुप्त शत्रु को,
कहता हूँ सशपथ मैं, उठती झट मेरी लात,
खाती न रंच भी तरस उस पापी पर,
सागर की लहरों में मैं देता धकेल हो निष्ठुर असहाय को।
जगता वह अचानक, तो त्रास-जन्य कम्पनों से
उसको मैं तीखे ठहाकों से धिक्कारता,

ई दोल्गो मन्ये येवो पावेन्या
स्मशोन ई स्लादोक बील बी गुल ।

मोलोदोय त्सीगान

ईश्चयो श्रोदनो···श्रोदनो लोब्ज़ान्ये !···

ज़ेम्फीरा

पारा : मोय मुझ् रेनीव ई ज़्लोल ।

त्सीगान

श्रोदनो···नो दोल्ये ! ·· ना प्रोश्चान्ये ।

ज़ेम्फीरा

प्रोश्चाय, पोकाम्ये स्त ना प्रोइयोल ।

त्सीगान

स्काझ़ी—कोग्दा झ् श्रोप्यात्य् स्वीदान्ये ?

ज़ेम्फीरा

सेवोद्न्या, काक जाइद्योत लूना,
ताम ज़ा कुरगानोम् नाद मोगीलोय···

त्सीगान

श्रोबमान्येत ! ने प्रीद्योत श्रोना !

ज़ेम्फीरा

वोत श्रोन ! बेगी ! ···प्रीदू, मोय मीली ।

श्रालेको स्पीत । व येवो उम्ये
विदेन्ये स्मूतनोये इग्रायेत;
श्रोन स क्रिकोम् प्रोबुद्यास् वो त्स्ये,
रेवनीवो रुकू प्रोस्तीरायेत;
नो श्रोबोबेलाया रुका
पोकोवो क्लादनीये स्वातायेत—

ग्रौर बड़ी देर तक उसका वह गिरना मुझे
सुखप्रद होता ग्रौर मधुर होती उसकी चीख-पुकार।

युवक जिप्सी

एक ग्रौर···एक चुम्बन !···

ज़ेम्फीरा

समय हो गया है ग्रब,
मेरा पति बहुत ही दुष्ट ग्रौर ईर्ष्यालु है !

युवक जिप्सी

एक···बस एक···विदाई का !

ज़ेम्फीरा

ग्रलविदा, जब तक न आए वह !

युवक जिप्सी

बता ग्रब, होगा फिर मिलन कब ?

ज़ेम्फीरा

ग्राज, जब चाँद छिप जाएगा;
वहाँ, उस पहाड़ी के पीछे, कब्र पर···

युवक जिप्सी

धोखा करेगी ? नहीं ग्राएगी वहाँ ?

ज़ेम्फीरा

देखो वह, भाग जा···ग्राऊँगी मेरे प्रिय !

ग्रालेको सो रहा है। उसके मस्तिष्क में
खेल रहा है धूमिल-सा स्वप्न एक;
चीख मारकर उठ खड़ा हुग्रा वह अँधेरे में,
फैलाता है हाथ, ईर्ष्या से;
परन्तु काँपता, हुग्रा हाथ
ठण्डा पड़ जाता है—

येवो पोब्रुगा दाल्यौका ··
ग्रोम स ग्रेपेतोम् प्रीवस्ताल ई ब्नेमल्येत···
पत्यो तीखो, स्त्राख येवो ग्रोब्येमल्येत,
पो न्यौम् तेकूत ई भ़ार ई ख्लाद;
वस्तायौत ग्रोन, इज़ शाग्रा वीखोदीत,
वोक्रुग तेलेग, उभ़ास्येन, ब्रोदीत;
स्पोकोयनो फ्स्यो; पोल्या मोल्चात;
स्योम्नो; लूना ज़ाशला व तुमानी,
चुत्य ब्रेज्भ़ीत ज़्व्योज़्द नेवेरनी स्वेत,
चुत्य् पो रोस्ये प्रीमेतनी स्लेद
बेग्लोस ज़ा दालनोये कुरगानी :
नेतेरपेलीवो ग्रोन इद्योत,
कुदा ज़्लोवेश्ची स्लेद वेद्यौत ।

मोगीला ना क्रायू दोरोगी
ब्यालो बेलेयेत पेरेद नीम ··
तुवा स्लाबेयूश्चीये नोगी
ब्लाचौत, प्रेबयुवस्तवियेम् तोमीम्,
ग्रोभ़ात उस्ता, ग्रोभ़ात कोलेनी,
इद्यौत···ई वग्रुग··इल् एतो सोन ?
वग्रुग वीदीत ब्लीज़कीये ह्रे तेनी
ई ब्लीज़की शोपोत स्लीशीत ग्रोन
माद ग्रोबेसस्लावलेन्नोय मोगीलोय ।

पेरवी गोलोस

पोरा···

फ़्तोरोय गोलोस

पोस्ताय···

उसकी प्रियतमा पास नहीं ··वह उठता है कांपता-सा,
देखता है ध्यान से···सर्वत्र मौन है ।
हो जाता है वह भयभीत उष्ण और शीत प्रस्वेद आ जाता है ।
उठा वह, आया लो बाहर शिविर के,
गाड़ियों के आस-पास घूमता भयंकरता से ।
सर्वत्र मौन है, खेत निस्तब्ध हैं;
घोर अंधकार है, छिप गया है चन्द्रमा धुन्ध में,
तारे कुछ मंद-मंद फेंक रहे हैं प्रकाश ।
ओस के ऊपर लो स्पष्ट पदचिन्ह कुछ
दूर जा रहे हैं उस पहाड़ी की ओर अरे !
छटपटाकर चल पड़ा वह उस ओर
जहाँ वे लांछनामय चिन्ह ले जाते हैं ।

सड़क के किनारे पर वह कब्र
दूर से ही दीख पड़ती है श्वेत;
उसकी ही ओर वह लो चल देता है लड़खड़ाता हुआ,
वेदना की पूर्व अनुभूति से ओंठ फड़फड़ा रहे हैं,
घुटने थरथरा रहे हैं, चला वह जा रहा है···
और अकस्मात्···कहीं सपना तो नहीं है यह !
सहसा वह देखता है दो परछाइयाँ पास ही,
और सुन पड़ती है कुछ कानाफूसी-सी अरे !
उस अपलांछित कब्र के ऊपर वहाँ !

पहला स्वर
समय हो गया है अब···

दूसरा स्वर
ठहर ज़रा···

पेरवी गोलोस

पोरा, मोय मीली ।

फतोरोय गोलोस

न्येत, न्येत, पोस्तोय, दोभ्ह्योमसा दुन्या ।

पेरवी गोलोस

उभ्ह पोश्यनो ।

फतोरोय गोलोस

काक ती रोबको ल्युबीश् ।

मिनूतू !

पेरवी गोलोस

ती मीन्या पोगुबीश् ।

फतोरोय गोलोस

मिनूतू !

पेरवी गोलोस

येस्ली ब्येज़ मीन्या

प्रोस्न्यौत्सा मुभ्ह ?...

आलेको

प्रोस्नूलसा या ।

कुदा वी ! ने स्पेशीत्ये ओबा;

वाम खोरोशो ई ज़्देस्, उ प्रोबा ।

ज़ेम्फीरा

मोय द्रुग, बेगी, बेगी ..

आलेको

पोस्तोय !

कुदा कासाव्येरस मोलोदोय ?

लेभ्ही !

(वोन्ज़ायेन व नेवो नोभ्ह)

पहला स्वर

समय हो गया है, मेरे प्रियतम अब !

दूसरा स्वर

नहीं, नहीं, ठहर ज़रा, करलें प्रतीक्षा
हम दिन की।

पहला स्वर

हो चुकी है देर बहुत।

दूसरा स्वर

कितना डरती हुई करती है प्रेम तू ?
एक पल···

पहला स्वर

कर डालेगा मुझे बरबाद तू !

दूसरा स्वर

बस, एक पल···!

पहला स्वर

यदि बिना मेरे जाग पड़ा पति मेरा···?

आलेको

जाग हूँ पड़ा मैं अब।
तुम अब किधर चले ! जल्दी मत करो दोनों
अच्छे रहोगे यहाँ पास इस कब्र के ही !

ज़ेम्फीरा

मेरे मित्र, भाग···भाग···

आलेको

ज़रा ठहर,
किधर चल पड़ा तू सुन्दर युवक ?
लेट जा !
(उसके छुरा घोंप देता है)

ज़ेम्फ़ीरा

आलेको !

त्सीगान

उमीरायू…

ज़ेम्फ़ीरा

आलेको, ती उब्पोश् येवो !

ब्ज़ग्ल्यानी : ती व्येस् ओबरीज़गान क्रोव्यू !

ओ, च्तो ती ज़्देलाल ?

आलेको

नीचेवो ।

तेपेर् दीशी येवो ल्युबोव्यू ।

ज़ेम्फ़ीरा

न्येत, पोल्नो, ने बोयूस् तेब्या !—

त्वोई उग्रोज़ी प्रेज़ीरायू,

त्वोये उबीइस्त्वो प्रोक्लीनायू…

आलेको

उम्री भ़ ई ती !

(पोराझ़ायेत येयो)

ज़ेम्फ़ीरा

उम्रू ल्युब्या…

वोस्तोक, देन्नित्स्येय ओज़ारयोन्नी,

सीयाल; आलेको ज़ा खोल्मोम्,

स नोझ़ोम व रुकाख, ओक्रोवावलेन्नी,

सीदेल ना काम्न्ये ग्रोबोवोम् ।

द्वा त्रूपा पेरेद नीम लेझ़ाली,

उबीइत्सा स्त्राश्येन बील लित्सोम ।

जेम्फीरा

आलेको···!

युवक जिप्सी

मर···रहा···हूं···मैं···!

जेम्फीरा

आलेको, उसको तू जान से ही मार डालेगा ?
देख, तू खून के छींटों से लथपथ है !
क्या कर डाला यह तूने अरे !

आलेको

कुछ नहीं।
ले अब सांसें तू उसके प्रेम की !

जेम्फीरा

नहीं, मैं तुझसे नहीं डरती हूं,
करती हूं घृणा मैं तेरी इन धमकियों से;
और देती हूं तुझे इस हत्या का शाप···

आलेको

मर तू भी···!
(उस पर वार करता है)

जेम्फीरा

मर गई प्रि···य···त···म !

प्राची प्रदीप्त थी उषा के प्रकाश में,
पीछे उस पहाड़ी के बैठा आलेको, खून से लथपथ,
लिए हुए छुरा वह हाथ में, कब्र के पत्थर पर;
दो मृत शरीर पड़े थे उसके सामने।
खूनी का चेहरा भयंकर था,

त्सीगानी रोबको श्रोक्‌झ़ाली
येवो द्स्त्रेवोझ़ेन्नोय तोल्पोय ।
मोगीलू व स्तोरोन्ये कापाली ।
इली झ़्‌यौनी स्कोबंनोय चेरेदोय
ई व श्रोची म्योर्तवीख त्सेलोवाली ।
स्तारीक-श्रोत्येत्स श्रोदीन सीदेल,
ई ना पोगीबशूयू ग्लयादेल
व नेमोम ब्ये्ज़देस्तवीई पेचाली;
पोद्न्याली त्रूपी, पोनेसली
ई व लोनो ख्लाद्नोये ज़ेम्ली
येतू म्लादूयू पोलोझ़ीली ।
श्रालेको इज़दाली स्मोत्रेल
ना फ्स्यो · कोग्दा झ़्‌ये इख ज़ाक्रीली
पोस्लेदन्येय गोर्स्त्यू ज़ेम्लोय,
श्रोन मौल्चा, मेद्लेन्नो स्कलोनीलसा
ई स कामन्या ना त्राव् स्वालीलसा ।

तोग्दा स्तारीक, प्रीब्लीझ़ास्, रेक :
"श्रोस्ताव नास, गोर्दी चेलोवेक !
मी दीकी, न्येत उ नास ज़ाकोनोव ।
मी ने तेरज़ायेम्, ने काज़्नीम्—
ने नूझ़नो क्रोवी नाम ई स्तोनोव,—
नो झ़ित्य् स उबीइत्स्येय ने ख्रोतीम्...
ती ने रोझ़्दीन् द्ल्या दीकोय वोली,
ती द्ल्या सेब्या लीश् ख्रोच्येश् वोली;
उझ़ास्येन नाम त्वोय ग्लोस—
मी रोब्की ई दोब्री दुशोयू,

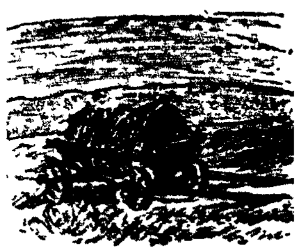
जिप्सियों की उत्तेजित भीड़ ने,
डरते-डरते उसे घेर लिया, ।
कब्र वहीं एक और खोदी गई ।
रोती हुई आईं बारी-बारी से नारियाँ,
और चूमा उन मृतकों की आँखों को।
एकाकी बैठा था वहाँ एक बूढ़ा बाप,
देख रहा था प्रिय बेटी के शव को
मूक, निःस्तब्ध औ' शोकग्रस्त;
उठा लिया शवों को ले चले शनैः-शनैः
और उस धरती के शीतल आँचल में
रख दिया उस युवा युग्म को ।
देखा आलेको ने दृश्य यह दूर से सारा ही ।
और जब उनको ढाँप दिया गया
मुट्ठी-भर मिट्टी के अंतिम कणों से,
तो वह मौन, धीरे-धीरे उठा और झुक गया,
गिर पड़ा पत्थर से घास पर धड़ाम से ।

बूढ़े ने आकर समीप उसके कहा—
"छोड़ दो हमारा साथ, अरे अभिमानी पुरुष,
जाहिल हैं हम और कोई क़ानून नहीं कुछ भी है हमारे यहाँ ।
देते नहीं हैं दुःख हम किसी को, दण्ड नहीं देते—
हमें नहीं चाहिएँ खून और ठण्डी आहें,
और नहीं चाहते हम साथ रहना खूनियों के ।
पैदा नहीं हुआ है तू वन्य-जीवन-हित,
तू चाहता है स्वच्छन्दता केवल अपने लिये;
लगेंगे भयंकर हमें तेरे बोल—
हैं हम डरपोक और सीधे हैं स्वभाव के,

तो ज़ोल ई स्मेल— ग्रोस्ताव् भ्रु.ये मास,
प्रोस्ती, या बूधेत मीर स तोबोयू।"

स्काज़ाल — ई शूमनोयू तोल्पोयू
पोवन्यालसा ताबोर कोचेवोय
स खोलीनी स्त्राशनोवो नोचलेगा,
ई स्कोरो फ़्स्यो व दाली स्तेपनोय
सोक्रीलोस्; लीश् ग्रोवना तेलेगा,
उबोगीम क्रीताया कोव्रोम्,
स्तोयाला व पोल्ये रोकोवोम।

ताक इनोग्दा पेरेद ज़ीमोयू,
तुमान्नोयु उत्रेन्येय पोरोयू,
कोग्दा पोद्न्येमल्येत्सा स पोल्येय
स्तानीत्सा पोज़्दनिख़ झुराव्ल्येय
ई स क्रिकोम वदाल ना यूग नेस्योत्सा,
प्रोन्ज़ेन्नयोन्नी गिबेलनीम स्वीन्त्सोम
ग्रोदीन पेचाल्नो ग्रोस्तायोत्सा,
पोविस्नूव रानेनीम क्रीलोम।
नास्ताल्ला नोच्; व तेलेग्ये त्योम्नोय
ग्रोग्न्या निक्तो ने राज़्लोझ़ील,
निक्तो पोद क्रीशेयू पोद्येमनोय
दो उत्रा स्नोम ने ग्रोपोचील।



किन्तु तू पापी है और महासाहसी है,
छोड़ दे हमारा साथ, क्षमा कर हमें तू,
ईश्वर तुझे शान्ति दे !"

कहा यह उसने और तब तक उस भीड़ ने
कोलाहल करते हुए कूच के तम्बू उखाड़ लिये,
उस घाटी से, जहाँ काटी थी भयंकर रात,
और झट सब-कुछ दूर मैदान में लुप्त हो गया !
बस रह गई एक गाड़ी ढंकी हुई एक फटी-पुरानी दरी से,
खड़ी रह गई उस मनहूस घाटी में ।
जैसे कभी-कभी शरद-ऋतु के पूर्व के धूमिल प्रभात में,
खेतों से उठती है सारसों की अन्तिम पंक्ति,
करती कल-गान चली जाती है दक्षिण को,
किन्तु एक सारस वधिक की गोली से
होकर बिद्ध, पीड़ा-ग्रस्त पीछे रह जाता है
फड़फड़ाकर अपने वे घायल पंख ।
हो गई रात; उस तमसाच्छन्न गाड़ी में,
नहीं जलाया दीपक किसी ने भी,
कोई भी उभरी-सी उस छत के नीचे
सोया नहीं निद्रा में प्रातःकाल तक ।



ऐपीलोग

बालशेबनोय सीलोय पेस्नोपेन्या
व तुमान्नोये पाम्याती मोयेय
ताक प्रोभ्भिवल्यायूत्सा वीदेन्या
तो स्वेतलील, तो नेचाल्नील वुन्येय।

व स्त्रान्ये, गद्ये वोल्गो, वोल्गो प्रानी
उभ्भास्नी गुल ने उमोल्काल,
गद्ये पोवेलीतेल्नीये प्रानी
स्ताम्बूल रस्की उकाजाल,
गद्ये स्तारी नाश ग्रोरयोल हुग्लावी
ईग्रचयो शुमील मिनूवश्येय स्लावोय,
वल्प्रेचाल या पोत्रेही स्तेप्येय
माव चवेभ्भामी ब्रेवनिल स्तानोव
तेलेगी मीरनीये स्तोगानोव,
स्मीरेन्नोय बोल्नोस्ती वेस्येय।
या हुस लेनीवोमी तौल्यामी
व पुस्तीन्याख चास्तो या ब्रोवील,
प्रोस्तूयू पीश्चू हुस देलील
ई जासीपाल प्रेव हुस ग्रोस्यामी।

उपसंहार

प्रेरित हो गीतों की चमत्कृत शक्ति
मेरे धुंधियाले-से मस्तिष्क में
इस प्रकार दृश्य हो उठता है सजीव,
कभी सुखपूर्ण, कभी व्यथापूर्ण दिवसों का।

उस देश में, जहाँ चिर-काल तक
शान्त नहीं हुआ भयद रण-कोलाहल कभी।
जहाँ साम्राज्य की नूतन जय-सीमाएँ
स्ताम्बुलको रूसियों ने थीं दिखाईं,[1]
जहाँ पर हमारा वह पुराना दो सिर का बाज[2]
अब तक अलापता है कीर्ति-स्वर अतीत का।
वहीं पर देखी मैंने उस मैदान में,
जीर्ण-शीर्ण तम्बुओं की पंक्तियों के पास ही
गाड़ियाँ शान्तिप्रिय जिप्सियों की—
विनम्र, स्वच्छन्द प्रकृति के उन सपूतों की।
साथ-साथ जिप्सियों के उन अलस झुण्डों के
घूमा हूँ खूब मैं उन निर्जन मैदानों में,
खाया है उनका वह रूखा-सूखा अन्न मैंने,
जी-भरकर सोया हूँ उनकी आग के समक्ष

---

१. बुखारेस्त की शान्ति-संधि (१८१२) की ओर संकेत है। रूसियों और तुर्कों की लड़ाई (१८०६-१२) में रूसियों की विजय होने पर यह संधि हुई थी। इस संधि के अनुसार तुर्कों ने नई सीमाओं को स्वीकार किया और बेसारबिया रूस को मिल गया।

२. ज़ारशाही रूस की सरकारी मुहर का चिन्ह।

व पोक्रोवाख मेदलेन्नीख ल्युबील
इख पेस्येन रादोस्तनीये गूली—
ई दोल्गो मीलोय मारीउली
या ईम्या नेझ्नोये स्वेरबील ।

मो स्वास्त्या न्येत ई मेझ्दू वामी
प्रीरोदी वेचनीये सीनी !...
इ पोद इज्ब्राम्नीमी शात्रामी
झीवूत मुचीतेल्नीये स्नी ।
ई वाशी सेनी कोचेवीये
व पुस्तीन्याख ने स्पास्लीस् ओत बेद,
ई पस्यूदू स्त्रास्ती रोकोवीये,
ई ओत सुदेब जाश्चीती न्येत ।

उनके उन मंथर प्रस्थानों में गाए गए
गीतों के स्वर मुझे बहुत ही पसन्द आए ।
और चिरकाल तक प्रिय मारिउला के
सुन्दर नाम का पक्की तरह से मैंने पता लगाया है ।

किन्तु है न तुम्हारे बीच में भी सुख विद्यमान,
अरे तुम प्रकृति के अकिंचन सपूतो !...
और फटे-पुराने तुम्हारे इन तम्बुओं के
नीचे भी रहते हैं व्यथापूर्ण सपने ।
और यह तुम्हारे भ्रमणशील तम्बू भी
बीहड़ों में भी न बच पाए दुखों से,
और हैं सर्वत्र लालसाएं उद्दाम,
भाग्य के अंकों से होता कुछ बचाव नहीं ।